श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः

श्री प्रिया प्रीतमाभ्यां नमः

श्री मत्यै चन्द्रकलायै नमः

श्री मत्यै चारुशीलायै नमः

श्री मन्मारुत नन्दनाय नमः

सीताराम वर्षोत्सव

जिसमें भगवान श्री सीताराम जी के वर्ष भर के बधाई, झूला, रास, शरद ऋतु, विवाह, होरी एवं जुगल झाँकी के पद आदि के उत्सवों श्री अग्रस्वामी जी, गोस्वामी श्री तुलसीदास जी, श्री कृपा निवास जी, स्वामी श्री रामचरणदास जी, श्री युगल प्रिया जी, श्री रसिक अली जी, स्वामी श्रीयुगलानन्यशरण जी आदि रसिकाचार्यों की महावाणियों का संग्रह है।

संकलनकर्त्ता एवं प्रकाशक :-

श्री वैदेही वल्लभ शरण जी

श्री हनुमान बाग, श्रीअयोध्याजी

परिवर्धित तृतीय संस्करण

संवत् २०६१, श्री चैत रामनवमी

प्रति १०००] [न्यौछावर ४०) रुपये मात्र

लाल सखी झुकी झमकी झुलावहि फहरै वसन सुठी लाल।
सब साज बाज लिये झुकि झुलत सिया सहित रघुलाल ।।

पद १८

झूला लाल लाल सब साजे, सिया लाल विहारी ना ।
लाल बाग में लाल हिंडोला, लाल प्रवाल पड़े अनमोला ।
मानहुँ लाल खजाने खोला, बसुधा रस रिझवारी ना०।।
लाल बसन भूषन तन धारे, लाल लली ललना मनहारे,
बीरी बदन अधर अरुनारे, अन्तर राग उघारी ना० ।।
लाल साज सजि ललना ठाढ़ी, राग प्रीति उमगत अतिगाढ़ी
राग सिंधु मथिकै जनु काढ़ी, परमा सुधा निरारी ना० ।।
लाल लसैं लोचन अनियारे, लाल कटाक्ष छुटैं जहँ न्यारे,
हँसनि जाल जनु मदन पसारे, लाल सिया मनहारी ना०।।
लाल लड़ैती लाली राँची, झूला सुख मूला रस माची,
कजरी गाइ 'कान्ति' गति नाची, तन मन धन बलिहारी ना०

हरित झूला पद-१९

आज दोउ झूलत रंग भरे, सजि सब साज हरे ।
हरित कुँज घनलता हरित हैं, तरुवर हरित फरे।
हरित भूमि नभ हरी हरी मय पंछी हरित चरे ।
हरित हिंडोला हरित डाल में, हरित डोर जकरे ।
हरित वसन भूषण औ आसन चामर हरित ढरे ।
हरित सखी दोउ ओर झुलावति मेघ राग उचरे ।
दोउ किशोर तेहि मध्य लसतु हैं हरित छत्र सिर धरे ।

पीत श्याम आपुस में मिलिके हरित रंग उघरे ।
कोयल कीर मोर गन के मिस देखत 'देव' खरे ।।

पद २०

सिया प्यारी अति सुकुमारी, पिया संग झूलें हो ।
हरित मणिन के खंभ दंभ हर, हरित डोर रेसम ।
जगमग कर, हरित जरीन बिछे पटरी पर, हरित अवनि
सुखमाकर, सरयू कूलैं हो । हरित चंद्रिका मुकुट बिराजै
कुण्डल तरिवन हरित सु छाजै, हरित हार हीरन हिय
भ्राजै, निरखि मदन रति लाजै, हरित दुकूलैं हो ।।
प्यारी पिय सुखकंद निहारैं, प्यारे प्रिया मुखचंद निहारैं,
'युगलविहारिणि' तन मन वारैं, एको पल न विसारैं,
दोउ मुद मूलैं हो ।।

पद २१

मेरा बांका सँवरिया, हरे रंग झूलत आज रे ।।
हरित महल में हरित मनिन में, हरित हिंडोरा भ्राज रे ।
हरे हरे भूषण सब साजे, झूलत श्रीरघुराज रे ।।
हरित सितार सरंगी बीणा, हरित ताल छबि छाज रे ।
हरित सखी सब नृत्य करतु हैं, हरित पखावज बाज रे ।।
हरित भूमि सब तरुवर हरियर, हरित कीर खग बाज रे ।
हरित मोर भवनन पर नाचत, हरित गगन घन गाज रे ।।
हरित हरित 'रघुवर' छबि लखि करि काम कोटिशत लाज रे
हरित छटा अवलोकि गगन ते कुसुम वरष सुरराज रे ।।
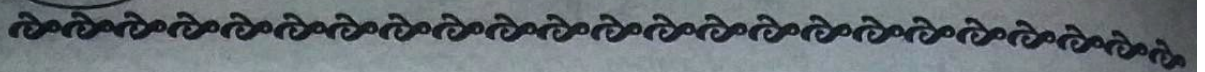
पद २२

झूलें जानकी सुजान आजु हरित लतान ।
वर विपिन प्रमोद मोद तन्यो है वितान ।।
दोउ साजै हरी साज हरी हरी मुसुकान ।
हरी हरी सखी गावैं हरी हरी राग तान ।।
हरी हरी दूब खूब महबूब झलकान ।
हरी भरी सरजु तरंग सुखखान ।।
प्रेमप्रभा प्रेमलता छटा भयो है मिलान ।
लखि 'युगलविहारिणी' को सुख भयो है महान ।।

पद २३

छयल दोउ हरित हिंडोरा राजै ।।
हरित डोर में हरित हिंडोरा हरित सिंगारहिं साजै ।
हरित कीर डारन पै बोलै, हरित भूमि छबि छाजै ।।
हरित सखी दोउ ओर झुलावै, देखि चंद दुति लाजै ।
'मोहनि अली' युगल मूरति को, ध्यान धरे अघ भाजै ।।

पद २४

झूलत राम सिय मन हरे ।।
हरे भूषण वसन सजि तन बाँहु अंशन धरे ।
हरे विपिन प्रमोद तरु गन बेलि फूले फरे ।।
हरे मोरी मोर बोलत नटत घन दुति करे ।
हरे सिय रघुनन्द रमकत प्रीति फंदन परे ।।
हेरि हँसि मृदु बचन बोलत हरस दोउ सुख भरे ।
हरे श्यामल गौर मिलि रसरंग निज जन करे ।

दुलहा दुलहिन का झूला पद-२५

दुलहिनि संग दूलह झूलि रहे ।।
मौरी मौर सुभग सिर धारे नव योवन दोउ उमग गहे ।
ग्रथित चूनरी पीत उपरना कर कंकन छबि अधिक लहे ।।
नासामणि अधरन पर हलरत मंद हँसनि दृग चहनि चहे ।
कर पंकज मेंहदी पग जावक अनुपम शोभा कौन कहे ।।
ब्याह विधान कराइ सहेलिन गावति मंगल तालन हे ।
'प्रेममोद' सब ऋतु की लीला रास मंडल मधि नित्य बहे ।।

पद २६

चारो दुलहा हिंडोला झूलैं रे ।।
संग लिये दुलहिन मनहरनी छबि सब सुख की मूलैं रे ।
मणि मंडप तर ललित हिंडोरा उपमा नहिं कहुँ तूलैं रे ।।
अलिगन हरषि झुलावहिं गावहिं सब सजि अनुकूलैं रे ।
भूप समाज दुहु छबि अवलोकहिं महामोद लहि फूलै रे ।।
हँसनि चितवनि गलबाँही लषि तन मन सुधि सब भूलै रे।
'प्रेममोद' येहि ध्यान मगन नित नहि व्यापहि भव सूलै रे।

पद २७

नव दुलहिन के रस प्रेम पगे दिलदार दुलारी झुलावतु हैं ।
नव नेह निशान बजाय रहे, सुख हेम छेम झुलकावतु हैं ।।
कबहूँ कर चूमि प्रमोद भरे, कबहूँ भरि अंक लगावतु हैं ।
कबहूँ मुखचंद पियूष छके, चख चाह चकोर बढ़ावतु हैं ।।
मुख मोरि हँसै परसै अंग को, हरषैं मन को हरषावतु हैं ।

मृदु बोलत खोलत गाँठ हिये, गर प्रीति को गाँठ लगावतु हैं ॥
उरझी लट को सुरझाय रहे, 'मधुरी' मन को उरझावतु हैं ॥

पद २८

तिथि पंचमी सखियन मिलि के व्याह उछाय रचनिया रामा
अरे रामा, दुलहा संग में झूलि रही दुलहिनियाँ रे हरी ॥
मौरी मौर सुभग सिर सोहे, सेहरा लर छहरनियाँ रामा ।
अरे रामा, कमल नयन में काजर की सोहनियाँ रे हरी ॥
कर कंजन मेंहदी पग जावक की रंजनिया रामा ।
अरे रामा, वसन विअहुती भूषण मन भावनियाँ रे हरी ॥
झोंका दै दै सखियाँ झुलावति, नई नई कामिनियाँ रामा ।
अरे रामा, चित चोरति सखि, दुहुँ की मुरि मुसुकनियाँ रे हरी
नाचति गावति साज बजावति, नई नई कामिनियाँ रामा ॥
अरे रामा, 'रसकान्तिलता' के जीवन सियपिय धनियाँ रे हरी

पद २९

सावन सुहायो सुख नवल हिंडोरना में,
झूले मनभावन के संग मनभावनी ।
नवल नवेली राजें नवल सिंगार साजें,
बाँसुरी मृदंग बाजें गावें कलग्रामिनी ।
गाजें घन मन्द मन्द पवन झकोरे दै दै,
अति अनुराग में झुलावें गज गामिनी ।
प्यारी घनघोर सुनि पिया से लिपटि जात,
'मौन' घन साँवरी घटा में सोहैं दामिनी ।

पद ३०

लिये झूलैं रसीले सुघर गोरी ।

श्याम बदन पर जुलफैं छोड़े, लखत विहँसि अलियन ओरी।

मारत नैन बान तकि २ के, विवस भई सब लखि जोरी ।।

जो जहँ रही सो तहीं विवस भई, छूटि गई कर सों डोरी ।

'मधुरलता' लखि भई बावरी, फिरत जगत से मुख मोरी ।।

पद ३१

दै गलवाही झुलैं दोउ आजु ।

सरयू तीर तमालकुँज में जनकलली रघुराज ।

काह कहूँ सखि कहत बनै ना कोटिन सुख के साज ।

'मधुरअली' सब तजि संग झुलिहौं छाँड़ि लोक कुल लाज ।

पद ३२

लिये झूलें छबीले सुघर धनियाँ ।

घुंघट बीच अनोखी चितवन बदन सरोज कसे तनियाँ ।।

मंद हँसनि मुखचंद सुधा सर, जनकलली रघुकुल मनियाँ ।

'शीलमणी' नव रंग रंगीली, जोरी बनी सब सुखदनियाँ ।।

पद ३३

झमकि झुकि झूलत सिय प्यारी ।

प्यारो झमकि झमकि झुकि निरखत हँसन नेह वारी ।।

सावनी सारी मनहारी । हार हमेल गरे गजमुक्ता चंद्रहार धारी

छबीली छबिसों मतवारी ।

'शीलमणी' रघुलाल भाल को भाग लखो भारी ।।

पद ३४

दोउ झुलैं री हिंडोरा सोभा बरनि न जाय ।
झुकि मारे लचि पेग वारी पट फहराय ।।
तकि मारे तीखी सैन मुरि मन्द मुसुकाय ।
हिय लगत करजे टूक टूक होइ जाय ।।
पिय लेत कभुं प्यारी कसि अंक मों लगाय ।
प्यारी पिय मन लिन्हें मन्त्र 'मोहनी' चलाय ।।

श्याम झूला पद-३५

श्याम रंग झूलत सिय श्यामा, विलसैं पिय साँवलिया रामा ।
अरे रामा श्याम घटा में छटा छई दामिनियाँ रे हरी ।।
श्याम सुधासी बूँद बरसिके, श्यामा छिति छहरनियाँ रामा ।
अरे रामा श्याम रसिक हिय भरित, सरित उमगनियाँ रे हरी
श्याम मोर नाचैं गावैं पिक, सारो सुरन भरनियाँ रामा ।
अरे रामा मनहुं बिहँग बपु धरे फिरैं रागिनियाँ रे हरी० ।।
श्यामा सखी झुलावैं गावैं, श्यामल राग सोहनियाँ रामा ।
अरे रामा 'कान्तिलता' हिय श्याम रंग रंजनिया रे हरी० ।।

फूल डोल पद-३६

फूलन झूलन मध्य लसै दोउ, सिय पिय मन मोहनियाँ रामा ।
अरे रामा झूलैं फूलैं नवल नेह सरसनियाँ रे हरी ।।
फूलन भूषन वसन अदूषन, अंग अंग सोहनियाँ रामा ।
अरे रामा फूलन लैकै वाम, झुलै झूलनियाँ रे हरी० ।
फूलन के सिर छत्र फिरैं नव, फूलन चवँर ढुरनियाँ रामा ।

अरे रामा फूलन सौज लसैं कर, नव कामिनियाँ रे हरी० ।
सुमन सिंगार किये सखि नाचैं, गावैं नव रागिनियाँ रामा ।
अरे रामा फूल गढ़े सब साज बाज झमकनियाँ रे हरी० ।।
फूली फूली 'कान्तिलता' लखि, झूलन की रमकनिया रामा ।
अरे रामा झुलवति दै दै मन्द मन्द मचकनिया रे हरी० ।।

श्रीरास झूला पद–३७

श्रीसरयू तीर रास कुंजन में, झूलन परी सोहनियाँ रामा ।
अरे रामा झूलैं सरस छबीली, सिय पिय कामनियाँ रे हरी०।।
कबहुँ-२ दोउ उतरि झुलनते, थेइ थेइ धुनि सरसनियाँ रामा
अरे रामा नचत सखिन के मध्य लंक लचकनियाँ रे हरी०।।
चहुँ दिशि मंडलकार नचति बनि, नवनागरि कामिनियाँ रामा
अरे रामा गावति मानो सखी रूप रागिनियाँ रे हरी ०।।
घहरि घटा बरसत रस बूँदन, दमकि रही दामिनियाँ रामा ।
अरे रामा बहत पवन जनु मदन, मदन दीपनियाँ रे हरी०।।
रामश्याम घन निरखि सखिन के, मन मयूर नाचनियाँ रामा
अरे रामा 'कान्तिलता' मन मोहे पिय चितवनियाँ रे हरी०।।

झूला पद ३८

पाहुन भाग्य सँ सावन रसदारी पैलौंयों, ससुरारी अयलौंयों
परम पवित्र हमर मिथिला नगरिया, भाग्य उदय भेल ससुररिया
छबि रूप गुन खानि सिया प्यारी पैलौंयो, ससुरारी० ।
नेति नेति गावैं बेद श्रुति सागरिया,
हमनै बुझब अहाँ मुनि मनहरिया ।

लाड़िली जू के झुलावैं में अमारी भेलों यो०
हम सब सिया जू के सखि सहचरिया,
गावि कय सुनाउ अहाँ सरस कजरिया।
हम जहिने जनइ छी अहाँ हारि गेलौंयों, ससुरारी० ।।
सुजस सुनइ छी रूप धरी छी सँवरिया,
सबके मोहइ छी हेरि हेरि नजरिया।
'पटरानी' के निरखि बलिहारी भेलौंयों ससुरारी०।

पद ३६

हिंडोरे झूलत हैं सिय प्यारी।
सरयू तीर हिंडोर कुंज बिच सुरतरु की डारी .
प्रीतम रमक बढ़ावत गावत करि अलाप चारी ।।
डरपति लली दसन रसन गहि हँसत सखी सारी।
बैठे पिया भरि अंक लीन सिय बढ़े मोद भारी ।।
'रसमाला' यह रस विनोदलखि रति रतिपति गई बलिहारी।

दोहा

लखि श्रमित सिय झूलने पिय प्यारी लई भरि अंक।
लै गोद पिय झूलन लगे लखि छकि वदन मयंक ।।१।।
सनमुख सरस झूलन लगे अलि झमकि झोंटा देत।
प्यारी छबि पिय कंठ लपटि अली सो रस लेत ।।२।।

पद ४०

प्यारो प्यारी को झुलावैं गावैं रस भरि तान।
कनक भवन में कनक हिंडोरा रवि शशि जोति लजावैं।

चहुँदिशि ललित वितान बादरे झालर झमकि सुहावै ।।
इत घन गरजत रिमझिम बरसत मृदु मृदंग धुनि छावै ।
'रसिकअली' प्रिय प्रीतम ऊपर बार बार बलि जावै ।।

पद ४१

झुलावैं लाड़िले निज रानी ।
नेह नाह को निरखि नवेली अतिसय जिय सुखमानी ।
मृदु मुसक्याय लोभाय छयल मन गहि कर सों पिय पानी ।
बैठि परस्पर हेरत दोउ छबि, चितवनि अमृत सानी ।
गलबहियाँ दै झूलन लागे, कहि कहि मधुर बानी ।
देखि छटा कृत कृत्य अलीगन, विनहीं दाम बिकानी ।
'मधुरलता' सजि साज नचत ढिग, पिय पर भई दिवानी ।।

पद ४२

झुलावत राम रसिक पटरानी ।
कर गहि डोर चकोर दृगन करि, चितवनि चन्द्र लुभानी ।।
नाह नेह को निरखि नागरी, नैनन में मुसुकानी ।
'कृपानिवास' बिलासिनि प्यारी, प्रीतम को रस दानी ।।

पद ४३

झूलैं प्यारी, झुलावैं प्यारो ।।
मधुर मधुर करकंज मंजु गहि, रेशम रजु सुकुमारो
नैनन निरखि नवेली विधु मुख, मन्द हँसनि नृप वारो ।।
उरझि रहे अंग अंग रंग रस, सुरझनि अगम निहारो ।
'युगलअनन्यअली' दोउ नेहिन, ऊपर सरवस वारो ।।

पद ४४

झुलन पर अरुझि गये पिय प्यारी ।
भूषण से भूषण पट पट से श्याम गौर मनहारी ।।
जंघा जानु उरु कटि कटि से नवल अंग छबि भारी ।
उर उर से मुख मुखनि मिलाये भुज से भुज अँकवारी ।।
तन मन प्राण जीव एक किन्हें प्रीति सुरीति अपारी ।
'प्रेममोद' यह अनुपम अरुझनि निरखत अलिन सुखारी

पद ४५

झूलन पर हरित रंग दरसाई ।
श्याम गौर दोउ मिलिकै प्रगटेउ सोभा नवल सुछाई ।
सोहै मन सोहै दोउ सोहन हर तिय नेह लजाई ।।
पिय कुँडल सिय अलकन अरुझे श्रमकन मुख रसदाई ।
मन सों मन दृग दृगन मिलाये 'प्रेममोद' मन भाई ।।

पद ४६

कैसे झूलिहौं बलमुआँ सावन रगरी ।
गरजि गरजि घन जिय तरसावत,
निकसि चलत भीजि गई सगरी ।।
झुकि झोंकहु पिय बात न मानहु,
मुरुकि गई नाजुक अंगुरी ।।
कदम डार मोरी चुन्दरी उरझि रही
सुरझन दे पिय गैहौं कजरी ।।
यह विनती मानिय पिय 'राघव'
नित नित झूलिहौं मैं तोरे संगरी ।

पद ४७

धीरा झूलोंजी धीरा झूलो मोरी छतियाँ धड़क काई हूलो।
वार छूटि गै हार टूटि गै गिरिगै अंग दुकूलो।।
राम रसिक रस सहजक लीजै नाजुकता समतूलो।
'कृपानिवासी' कहत छबीली छयल मया जनि भूलो।।

पद ४८

अहो लाल धीरे झूलो लाड़िली डरै छै।
लाड़िली डरै छै अंग उघरै छै मोती लर लुड़कि परै छै।
अति सुकुमारि भार योवन की मृगनैनी चमक परै छै।
'जनरघुनन्द' सिया पिया छबि पर,पलक सों पवन करै छै।।

श्रीप्रियाजू का मान पद ४९

झुलन पर मान करी सिय प्यारी।
करि मुख विमन झुलन से उतरी, बैठि आइ द्रुम कुंझै।
प्यारे उतरि मनावन लागे मानत नाहिं दुलारी।
पिय बोले सुनु राजकुमारी, कौन सी चूक हमारी।
हमरे तौ तुम प्राणजीवन धन, तुम सम और न नारी।
तुव मुखचन्द सुधा के आशिक, नैन चकोर हमारी।
तुव मुख कमल भ्रमर मोरे मन, होत कबहुँ नहिं न्यारी।
लै विजना पिय मुख पर ढौरे, करत बयार सम्हारी।
तब हँसि उठी सुधा वदनी'सिय' मिलि भरि भुज अँकवारी

पद ५०

झूला झूलो सही मोरे प्राण प्यार से झोंको ना।

जब पिया झोंका देत झमकि से,

डरति सिया सुकुमारि लाल तुम रोको ना ।

जस महराज कुमार कुवँर तुम अधिक,

लली सुकुमारि लाल झकझोरो ना ।

'प्रीतिलताअलि' रसिक शिरोमनि वसिया

सरयू कूल लाल मुख मोरो ना ।।

पद ५१

धीरे धीरे से झुलावो मेरे बाँके बलमाँ ।
झोंका झोकों जनिजोर छैला छाके छलमाँ ।।
अस कहि सिय डरी लपटानी गरमाँ ।
मानो मिली सुरसरित जमुन जलमाँ ।।
लागी गावन सुसावन सु कण्ठ कलमाँ ।
करें पवन पिय प्यारी पगें नयना पलमाँ
बसें ऐसे सीताराम जाके हिय थलमाँ ।
धन सोई 'रसरंगमणि' भूमि तलमाँ ।।

पद ५२

झूला झूलो सम्हारि कै लालना ।।

हजार बार कहा आप मानते ही नहीं । रहम करना गोया आप जानते ही नहीं ।। धड़कता है मेरा दिल और आप हँसते हैं । किसी के पीर को वेपीर क्या समझते हैं । कहवैंहो निठुर यहि चालना ।। भला, अबतो कहा मान लीजिये साहब, नहीं तो होली में फिर जान लीजिये

साहब। कसर निकालेंगी सखियाँ जय बोलावेंगी, शरण पुकारियेगा आप तब छुड़ावेंगी, परिजैहौ सखिनके पालना ।।

पद ५३

सजन आज झूला झुलाना पड़ेगा

छबीले छली छल भुलाना पड़ेगा ।

किया हैरान था मुझको जो फागुन के महीने में, कसर सारी गिन गिन चुकाना पड़ेगा । उतर कर आप झूले से खड़े हो जाइये साहब, कानूनन न हीलो बहाना चलेगा । गहो डोर रेशम कमल कर में प्रीतम, रसीली सिया को झुलाना पड़ेगा । बढ़े पेग लम्बी भूलकर न हरगिज, रसे रस रसिक बर बढ़ाना पड़ेगा । खता माफ चाहो तो जुरमाना यह है, सिया के चरन सिर झुकाना पड़ेगा।। कियो सोइ प्रीतम रसीले रसिकमणि, 'मोद' स्वामिनि को कण्ठ लगाना पड़ेगा।।

पद ५४

अरे रामा रिमिझिमि बरसे पनियाँ

झूलें राजा रनियाँ रे हरी ।।

घिरि आये घुमड़ि घनकारे, परे रिमिझिमि बून्द फुहारे रामा, अरे रामा, चमकि रही दामिनियाँ रे हरी। अंग-अंग में भूषण निराला, गरे सोहैं मणिन की माला। अरे रामा, कमर पड़ी करधनियाँ । दोउ झूलैं सुरंग हिंडोरा, बिन दाम लेत मन मोला रामा। अरे रामा, मन्द-मन्द

'रामशरण' पिय निठुर भयो कस गुननि के आगार रामा।
सिसकि सिसकि भनै जनक लड़ैती
मानो तो बतिया हमार रामा ॥

पद ५९

झूलत सीताराम हिंडोरे।
श्याम गौर अभिराम मनोहर रतिपति के चितचोरे।
नील पीत वर बसन लसत तन उठत सुगन्ध झकोरे।
सहचरि हरषि झुलावहिं गावहिं छबि निरखति तृनतोरे।
मन्द मन्द मुसुकात छबीलो रमकत थोरे थोरे।
अति सुकुमारि 'अग्र' की स्वामिनि डरपि गहति पट छोरे।

पद ६०

झूलत सिया राजिव नैन।
रतन जड़ित हिंडोलना सखि राम सुख के ऐन।
श्याम अंग पर गौर झलकत दामिनी घन गैन ॥
मैथिली रघुवीर शोभा निरखि लज्जित मैन।
नाम पिय को लेहु नागरि ज्यों सखिन मन चैन।
जानकी नहिं लेति मुख सों देति लोचन सैन ॥
परस्पर झूलत झुलावत बदत मधुरे बैन।
अवधपुर नित केलि दम्पति 'अग्र' आनन्द दैन ॥

पद ६१

सिय प्यारी अति सुकुमारी हिंडोरना में काँई झूलो राज ॥
अगर चन्दन को बन्यो हिंडोरा मलयागिरि को पटा।

रेशम डोरि पवन पुरवैया वह सावन की घटा ।।
प्यारी झूलें लाल झुलावें भली बनी सजनी ।
उड़ि उड़ि अँचरा परत भुजन पर डरपति शशिवदनी ।।
विपिन प्रमोद लता कुञ्जन में श्रीसरयू के तटा ।
सिय प्यारी के झूलना वें निरखति 'अग्र' छटा ।।

पद ६२

झूलत राम राजिव नैन ।
जनकजा सनमुख विराजति तड़ित ज्यों घन गैन ।।
अतिहिं झूलत मनहिं फूलत रसहिं तोषत सैन ।
लाल के उर लागि शोभा निरखि लज्जित मैन ।।
परस्पर अनुराग दोऊ बदत मधुरे बैन ।
जाल रन्ध्रनि निरखि बनिता 'अग्र' उर सुख दैन ।।

पद ६३

आली री राघव के रुचिर हिंडोरना झूलन जैए ।।
फटिक भीति सुचारु चहुँदिशि मंजु मणिमय पौरि ।
गच काँच लखि मन नाच सिखि जनु पंच सर सुफँसौरि ।।
तोरन वितान पताक चामर ध्वज सुमन फल घौंरि ।
प्रति छाँह छवि कवि साखि दै प्रति सौं कहैं गुरु हौंरि।। १
मदन जय के खम्भ से रचे खम्भ सरल विसाल ।
पाटीर पाटि विचित्र भौंरा वलित वेलन लाल ।।
डाँडी कनक कुँकुम तिलक रेखैं सी मनसिज भाल ।

पटुली ग्दिकरति हृदय जनु कलधौत कोमल माल ।।२
उनये सघन घनघोर मृदु झरि सुखद सावन लाग ।
वग पाँति सुर धनु दमक दामिनि हरित भूमि बिभाग ।।
दादुर मुदित भरे सरित सर महि उमँग जनु अनुराग ।
पिक मोर मधुप चकोर चातक सोर उपवन बाग ।।३
सो समौ देखि सुहावनी नव सत सँवारि सँवारि ।
गुन रूप जौवन सींव सुन्दरि चलीं झुंडनि झारि ।।
हिंडोर शाल विलोकि सब अंचल पसारि पसारि ।
लागीं असीसन राम सीतहिं सुख समाज निहारि ।।४
झूलहिं झुलावहिं ओसरिन्ह गावैं सु गौंड़ मलार ।
मंजीर नूपुर वलय धुनि जनु काम करतल तार ।।
अति मचत स्रमकन मुखनि विथुरे चिकुर बिलुलित हार।
तम तड़ित उडुगन अरुन विधु जनु करत व्योम विहार ।।५
हिय हरषि वरषि प्रसून निरखति विवुध तिय त्रन तूरि।
आनन्द जल लोचन मुदित मन, पुलक तन भरि पूरि ।।
सब कहहिं अविचल राज नित कल्यान मंगल भूरि ।
चिरजियौ जानकिनाथ जग 'तुलसी' सजीवनि मूरि ।।६

पद ६३

झोंका दीजै सम्हारि कै, मोरी सारी न लटके ।
ई सारी मिथिला से आई चाँद सूरज दोउ भटके ।
सघनकुंज द्रुमडार कँटीलो कहीं छोर जनि अटके ।
'कृपासखी' इनकी चंचलता नैननि में कछु खटके ।

पद ६४

तेरी बाँकी झूलनि पर बारी रे ।
झूलन जोर हिया बिच कसकत मानहु हूल कटारी रे ।।
नैन कटाक्ष वान धनु भृकुटी जुलफन जाल सुधारी रे ।
'कृपानिवास' झुलनि मन चीता रहि गई ठाढ़ि की ठाढ़ी रे।

पद ६५

हिंडोरे झूलत सिया रघुनन्द ।
चलु री सखी नैनन फल लीजै देखि देखि दोउ चन्द ।
सावन घन घमण्ड झुकि आये मधुर मधुर झरि घोरे ।
मधुर मधुर मृदंग सहनाई बोलहिं नाचहिं मोरे ।
झूलहिं रघुवर जनकनन्दिनी सखियाँ झुलावहिं जोरे ।
झूलहिं झूलि जाहिं सरयू में झुकि झुकि छुवहिं हिलोरे ।
अतिसुन्दर वन बन्यो हिंडोरा संग समाज सब झूलें ।
इत उत झुकि झुकि झुलत हिंडोरे मारहिं गेंदन फूलें ।
झूलहिं संग झुलावहिं वहुप्रिय मधुर मधुर स्वर गावें ।।
'रामचरण' नभ सुरतिय नाचहिं गाय सुमन झरि लावें ।।

पद ६६

किशोरी संग झूलत नवल किशोर ।
दशरथ नन्दन जनक नन्दिनी सुन्दर श्यामल गौर ।
सरयू तीर सुखद प्रमोद वन विश्व भूमि सिरमौर ।
तामधि मणिमय रचित हिंडोरा लगत हेममयं डोर ।
चन्द्रकला सखि हरषि झुलावति विमला ढोरति चौर ।
'युगलप्रिया' यह मधुर केलि लखि सुधि बुधि भई सब भोर

पद ६७

झूलत रसिकमनि रघुनन्द ।
संग सिय अलबेलि नागरि बदन छबि बहु चन्द ।
रतन जड़ित हिंडोरना लखि सूर शशि दुति मन्द ।
'रसिकअलि' अलिगन झुलावत मगन छवि के फन्द ।

पद ६८

हिंडोरे झूलत राजकुमार ।
अंश धरे भुज जनकलली के गावत मेघ मलार ।
वीरी देत ललन हँसि सिय मुख निरखत अंग उदार ।
तैसहिं सिया खवावति पिय को निरखि वदन सुखसार
सिय के भूषण लाल सँवारत सिय जु पिये उर हार ।
'रसमाला' दम्पति छबि निरखति ठाढ़ी अलिन अपार

पद ६९

हिंडोरे झूलत राजिव नैन ।
संग लिये सिय को अलबेली बोलत मधुरे बैन ।
कबहूँ पान खवावत सियको सिय पियको सुख दैन ।
झोंका लेत निरखि मुख की छबि होत दुहुन मन चैन ।
विमलादिक चहुँओर सखी सब झोंका दै सुख दैन ।
'रसमाला' मधुरे सुर गावहिं निरखि बदन सुख ऐन ।

पद ७०

आज झुलइहौ पिय तोको ।
हिय अभिलाष लाष भांतिन से है जीवनधन मोको ।

चंचलता चातुरी चलन चख चारु चरित अवलोको ।
लैहौं ललित लाह लोयन लखि चखि रतिरस दुति दोको
हिलि मिलि हलन ललन लोयन वर सुनि सज़िहौं सुखथोको ।
'युगल अनन्य अली' न्यौछावर करि दैहौं सब लोको ।।

पद ७१

झुलें दोउ रसिया झूलन बाँकी ।।
पगे परस्पर प्रीति रीति रस बनी अनोखी झाँकी ।
उघरत मोद मनोरथ पल पल रहत नहीं तिल ढांकी ।।
गावहिं गीत सनेह सनी सखि युगल सुछबि छन छाँकी ।
'युगलअनन्यअली' झूलन लखि चपल चातुरी थाँकी ।।

पद ७२

नव नागर नेह नहाये झूलत झूलना हो राज ।
सावन सुमन सनेह सोहावन अंगअंग मनमथ रति उपजावन,
छावन सुछबि बहावन, हरदम हेलना हो राज ।। रूप अनूप
प्रभा चहुँओरी, दमकि रही दामिनि दुति गोरी थोरी
वयस किशोरी न कोउ तिल तूलना हो राज ।। छाये ब्योम
सघन घन दरसे, सुधासार बूँदन वर बरसे, अग जग जीवन
हरषे, सरयू कूलना हो राज ।। 'युगल अनन्य अली' कर
जोरे, छिनछिन नाजुक नाह निहोरे, निरखहु नैनन कोरे न
कबहूँ भूलना हो राज ।।

श्री प्रियाजू का मान प्रीतमजू का गान पद ७३

प्यारी झूलन पधारो झुकि आई बदरा ।
सजि भूषण बसन अँखियन कजरा ।।
मान कीजिये काहे को सुख लीजिये अली ।
तूँ तो परम सयानी मिथिलेश की लली ।।
देखो अवध ललन पिय आगे हैं खड़े ।
रस बरसै 'सुधा मुखी' जब पाँयन पड़े ।।

पद ७४

श्यामा श्याम की झूलनि मेरे मन अटकी ।
लखि ललित लसनि सो सुरंग पटकी ।।
झोंका झमकि झुलावैं गावैं मुरि मटकी ।
सुख सरस रसीली छबि चष अटकी ।।
रसभीनी प्रीति 'युगलअली' के घट की ।
सोहि सकल सुसाज सरयू के तट की ।।

पद ७५

सरयू के तीर गड़ो हिंडोलना झूलत सीताराम अली । मन्द मन्द बरषत घन बूंदन, झरत मनहुँ कलिका नव कुँदन, हरित बरन आराम आली ।। छिन छिन दिशनि दिपति दामिनियाँ, झमकि झुलाय रही कामिनियाँ, पिय छबि दृग आराम आली ।। श्रीरघुराज शोक सब बिसरो, पूरन भयो मनोरथ सिगरो, आनन्द आठो याम आली ।।

पद ७६

दशरथ राज दुलारे सिया सँग झूलैं हो ।
सरयू किनारे सुहाई कदम जुरि छहियाँ हो ।
ताहि तर झूलैं हिंडोरा दिये गलबहियाँ हो ।।
इक ओर जनक किशोरी सखिन संग सोहैं हो ।
इक ओर राघो बिहारी लली मुख जोहैं हो ।।
प्यारी की लट पिया जुलफन झूलत अरुझैं हो ।
अचल रहैं 'सखि श्याम' कबहुँ नहिं सुरझैं हो ।।

पद ७७

मैं तोरे संग ना झूलौं बालम जियरा गइल घबराय ।
अतिशय झोंक झुलावत रसिया वेसर गइल हेराय ।।
अँचरा फरकि फरकि महि लोटत गूँथे लट छिटकाय ।
'श्याम सखे' मोरी अंगिया भीजि गइ वेनियाँ दीजै डोलाय

पद ७८

झमकि झूलूँगी सैंया तोरे संग ऋतु सावन की बहार ।
सरयू किनारे नई नई गछिया हो जहँ रचे मदन बजार ।।
रमकि बहत पुरवइया हो बून्दन परत फुहार ।
धरि धरि तोरे गलबहियाँ हो गाऊँगी राग मलार ।
'राम सखे' कदम जुरि छहियाँहो नित नई करिहौं बहार ।।

पद ७९

चलोरी-२ मोरी संग की सहेली सिय पिय झूलत झुलनवाँ ।।
निरखति विपुल व्योम सुर बामा हरषित बरषि फुलनमाँ ।

सिय मुख शशि पिय नैन चकोरी· यह छवि नाहिं भूलनमाँ ।।
श्रीचन्द्रकलादि अली अलवेली दुहुँ दिशि हूलत हूलनमाँ ।
गान तान सखि प्रान सजीवन हियकी हरत शूलनमाँ ।।
सिय सिय पिय हँसि दिये गलबाँही पटतर कहुँ न तूलनमाँ ।
'प्रीतिलता' दोऊ जीवन धन सब सुखके हैं मूलनमाँ ।।

पद ८०

श्री सतगुरु के सदनमाँ हो पिय झूलैं झूलनबाँ ।
संग लिये मिथिलेश दुलारी श्री सरयू के कूलनमाँ ।।
देववधू सब नाचहिं गावहिं हरषित बरषैं फूलनमाँ ।
उपमा खोजि खोजि कवि हारे कतहूँ न मिलत तूलनमाँ ।
'कान्तिलता' के जीवन धन दोउ सब सुखके हैं मूलनमाँ ।।

पद ८१

जय रहे अवधेश ललन मिथिलेश लली की जय रहे ।
पिया साँवरो सोहैं घटा सिय दामिनी सी छा रही ।।
बातें मधुर रस रहस के आनन्द जल बरषा रहे ।
अति रंग भरे झूलैं दोऊ दोउ ओर सखियाँ झूलावहीं ।।
झोंका सरस झुकि झूमि–झूमि भूषण झमा-झम बज रहे ।
चहुँ ओर ते नागरि खड़ी बाजें सु मधुर बजावहीं ।।
कोई तान लेत तरंग सी चातकि मयूरी सी ह्वै रही ।
तिरछी नजर हँसि हेरि हेरि फुलगेन्द की चोटैं चलैं ।।
'प्रेम अली' यह चाहती नित नयन में छाये रहैं ।।

पद ८२

नई रे सावन नई मेरो साँवरो नई सिया युगल किशोर ।
नई नई डरिया कदम जुरि ११ई नई रेशम डोर ।।
नई नई सखियाँ झूलन आईं नई राघोजी चितचोर ।
नई नई भूषण बसन राज नई नई नयनन कोर ।।
नई नई चात्रिक भनत वाणी नईं नई दादुर शोर ।
नई नई पुरवा रमकि बहे नई मेघवा घन घोंर ।।
नई नई बूँदियाँ परन लागी नई नई बोलत मोर ।
नई नई सरयू बढ़न लागी नई नई दिशा घन घोर ।।
नई नई विपिन प्रमोद शोभा नई नई चित के चकोर ।
नई नई 'राम शरण' दोऊ नई नई रस में बोर ।।

पद ८३

झूलन की झाँकी अजब बनी है प्यारी संग झुलैं पियरवारे ।
साँवली सुरतिया पै गोरी सियाजू अँखियाँ में सोहै कजरवारे
भूषण बसन राम सिय राजत रति अनंग छवि छोरवा रे ।
सरयू तीर प्रमोद बिपिन में हरि लीन्हों मेरो हियरवा रे ।।
घन गरजे चमकै दामिनियाँ सुनि सुनि बोलत मोरवा रे ।
नान्हीं नान्हीं बूंदिया परत भूमि पर धीरेधीरे बहत समिरवारे
'रामशरण' दम्पति सुखमा लखि नैन बहै जलधरवा रे ।
झूलन की झाँकी में चित नहि जाको जनु भूकत कुकुर सियरवा रे ।।

पद ८४

सरयू किनारे कदमजुरि छहियाँ रसिया हिंडोला लगौले बा।
सिय पिय रूप माधुरी दरसे कोटि मयंक लजौले बा ।।
श्याम अंग झीने पट झलकत जुलफन फुलेल लगौले बा।
राजकुमार सुकुमार छबीले जुवतिन पै जदुआ चलौले बा ।।
'रामशरण' दोउ रूप रंगीले सावन के मौज देखौले बा ।।

पद ८५

पड़ल हिंडोरा देखो कदम की डारी रामा, हरि हरि झूलि रहे अवध बिहारी रे हरी ।। रहि रहि झोंका मारै जनक दुलारी रामा। हरि हरि गावैं सखिजन सुकुमारी रे हरी ।। अलकैं बदन पर झूमैं घुंघुरारी रामा। हरि हरि उदै मानो चन्दा घन टारी रे हरी ।। 'मोहनि' कहति यह अरजी हमारी रामा। हरि हरि हिये बसो दोउ पिय प्यारी रे हरी ।।

पद ८६

आजु तो अवध सैयाँ झमकि झूलाऊँगी।
मीठी मीठी तान गाय मन्द मन्द मुसुकाय,
झोंकन को मारि हिय सुख न समाऊँगी ।।
लट सुरझैहौं उरझैहौं मन आपनो री।
कंठ सों लगाय हिय तपनि बुझाऊँगी ।।
पान को पवैहौं ताको उगिलन पैहौं आली,
'मोहिनी' बदन लखि सुख न समाऊँगी ।।

पद ८७

भीजत कुँजन में दोउ अटके ।

प्रिय पाहुने भये विटपन के पावन सरयू तटके ।

पवन झकोर लली मुख मोरति छिपति छोर पिय पट के ।

युगल स्वरूप अनूप छटा लखि रति मनोज मन भट के ।

इक टक छवि रस 'बिन्दु' पियत दृग पल भर हटत न हटके ।

पद ८८

दोउ जन लेत लतन की ओटैं ।

कछु पुरवाइ चलत घन गरजत कछु बून्दन की चोटैं ।

डरपति सिय पट छाँह करत पिय बांधि भुजन की कोटैं ।।

उत फहरत पचरंगी पगिया इत चूनर की गोटैं ।

यह छवि लखि दृग 'विन्दु' प्रिया प्रीतम के पाँय पलोटैं ।।

पद ८९

धानी रंगा दे मजेदार मोरा बालुम ।।

धानी पहिरि पिया तोरे संग झूलब गाउब राग मलार ।

गौरांगिनि के मध्य श्याम छबि शोभा अमित अपार ।।

हम तुम बालुम एक रंग ह्वै बिहरब सरयू किनार ।

'सियाअली' के याहि मनोरथ हो जा गले का हार ।।

पद ९०

प्यारी पिया संग झूलैं, उनये घनघोर ।।

डारे गरे दोउ बहियाँ, गरे दोउ बहियाँ, झोंकत झकझोर ।

सखियाँ झुलावैं गावैं, झुलावैं गावैं, विचबिच बोले मोर ।।

झोंकन चलत पुरवैया, चलत पुरवैया, फहरत पट छोर।
युवती झरोखन लागीं, झरोखन लागीं, 'श्रीकर' तृण तोर॥

पद ६१

रमके रितु पावस सजनी बहेला पवनमां हे।
प्रिया प्रीतम संग संग झूलत झूलनमां हे॥
सखियाँ झुलावैं दै दै प्रेम झोंकनमां हे।
तन मन धन वारैं लखि रूप युगलनमां हे॥
प्रिया मुख लखि पिय मन ललकनमां हे।
रसिकजन मन हर लीन्हें भुज अंशनमां हे॥
बैठे बितान बिच जोति चमकनमां हे।
प्यारी दामिनी दुति हरती पिया श्यामघनमां हे॥
सावन सरस वन संत मन फूलनमां हे।
परम पुनीत सरि सरयू कूलनमां हे॥
प्रेमिन चकोर चाहें चन्दमुख दरशनमां हे।
'मोहन' लखि मुसुकैं मनमोहन सजनमां हे॥

पद ६२

झमकि दोउ झूलैं रे हिंडोरवा।
रतन जड़ित शुचि सुभग हिंडोरवा, रेशम रजु छबि छोरवा।
रिमझिम रिमझिम सावन की बदरिया।
से चारो ओरिया बोलैं रे बन मोरवा॥
झमकि झुलावैं सखि गावैं री कजरिया।
निहारे लागीं आपन रे चित चोरवा॥
'मनमोहन' के प्राण सजीवन, सुफल अब भेलै रे दृगकोरवा॥

पद ९३

देखु हे नवेली आली, झूलन बहार ।
नवल किशोरी संग, नवल कुमार ।।
नवल कंचन वन नवल हिंडोल ।
चातक कोयल केर नवल सु बोल ।।
उमड़ि आयल नव घटा बेसुमार ।
चपला चमकि परे नवल फुहार ।।
नवला नारिक तहँ नवल जुटान ।
नवल साज लय गावे नव नव तान ।।
'लतारसकान्ति' फूलि अंग न समाय ।
नव सुख पावि लाल लली के झुलाय ।।

पद ९४

नहुँ नहुँ झूलू पहु नवल हिंडोल ।
टुटल ललीक गर हार अनमोल ।।
हमर स्वामिनी छथि बड़ सुकुमारि ।
ऐते जोर झोंका नहि सकती सम्हारि ।।
खसल भूषण सु वसन उधियाय ।
डर सँ ललीक मुख कंज कुम्हिलाय ।।
कियै नै मनै छी पिय रसिक सुजान ।
'लतारसकान्ति'क विनय करु कान ।।

पद ९५

मैं जानी सजनी सावन अब चलि जैहैं ।
झूलि लेहु प्रीतम नागर संग ना तो कर मीजि पछितैहैं ।।
यह सुख साज समाज सोहागिनि फिरि न अनत कहुँ पैहैं ।
सुमिरि सुमिरि यह छबि 'रघुवर' की छिनछिन बिरह सतैहैं।

आशीष का पद ९६

झूलैं नवल हिंडोरे, पिय प्यारी संग बनि ठनि श्यामा ।
रतन जड़ित अति रुचिर हिंडोरा तामें, रचना अनेक द्रुम सावन के कुँज बिच, बाजत मृदंग आदि गावति सखी समूह, कोटि काम रति वामा ।। शीतल सुगन्ध मन्द वायु के प्रसङ्ग जहँ, घेरि घेरि आवत वलाहक के बृन्द तँह, नान्हीं नान्हीं बुन्दियन बरिसन के समय, छबि अति शोभित सिय रामा ।।झू०।। शीश को नवाय ईश को मनाय कै 'मुनीश' बार बार बिनय करत कर जोरि जोरि, नृपति किशोर वो किशोरी जू आनन्द रहैं, यह हमार मन कामा ।।

पद ९७

सदा झूलो मेरे दिलवर बढ़े उत्साह नया ।
जियो युग युग प्रिया प्रीतम यही है चाह नया ।
लता बितान वन प्रमोद तीर सरयु के ।
हिंडोरा अति बिचित्र मणिन मय तैयार नया ।
अनेक यंत्र बाजते मृदंग वीणादिक,
अलापती हैं गान कला सजे साज नया ।

यही है चाह सदा नाथ अलि चकोरिन की,
बैठे झूलन पै दिखाते रहो मुखचन्द नया ।
यही अभिलाष 'कान्तिलता' श्री सिया जू की,
बढ़ै दिन दिन सदा सनेह सुख सोहाग नया ।।

संझा से भोर तक पद ९७

पावस रस लूटैं सरयु किनारे हो रामा ।
गम गम गमकै झम झम झमकै, झहरे फुहारे हो रामा ।।
ललित हिंडोरा हिलिमिलि ललना लगाइ कदम्ब के डारे हो
रामा । छन छने नव नव ज्योति सुजागें जगर मगारे हो रामा
परम प्रमोद भरे प्यारी अंक धरे झूलैं पिय प्यारे हो रामा ।
लखि लखि ललना नवेलिनि तन मन वारे हो रामा ।
यंत्रनि बजावैं गूढ़गति दरसावैं गावैं सु मलारे हो रामा ।।
दम्पति रीझि रीझि रस बरसै दृगनि इशारे हो रामा ।
झूलतहिं रसिया बिताई सारी रतिया ह्वैगै सकारे हो
रामा । 'मोद' पलहुँ न चाहै होंन न्यारे हो रामा ।।

पद ९८

सरयू कूले बना रहे सावन ।
पिय प्यारी नित झूला झूलैं अलिगन झमकि झुलावन ।।
घन गरजनि चमकनि दामिनियाँ मोरवा बोल सुनावन ।
बाजहिं बीण मृदंग मुरलिका राग रागिनी गावन ।।
छत्र फिरावन व्यजन चलावन दुहुँदिशि चँवर ढुरावन ।
मन्द हँसनि चितवनि रस बोलनि नैनन सैन चलावन ।।

अतर पान माला की पहिरन अरस परस मन भावन।
भूषन वसन अंग अरुझावन भुज से भुज लपटावन ।।
गेंद उछारन कमल फिरावन रसिकन हिय सुख छावन।
'प्रेममोद' तृण तोरि अशीष्रत राई लोन उतारन ।।

आलस का पद ९९

झुलें दोउ रसिया आलस माते ।
कहुँ सिय पिय पर कहुँ पिय सिय पर झुकि उठि पुनि मुसुकाते ।। तोड़त वदन लेत अँगड़ाई छनही छन जमुहाते।
पिय कच सिय श्रुति फूलन अँटके हँसि हँसि दोउ सुरझाते
प्रेमारस में छके छबीले गलबहियाँ लपटाते।
'मधुरलता' ते धन्य धरातल जे यह छबि हिय ध्याते ।।

पद १००

लाल मोरी अँखियाँ नींद झुकि आइ ।
अब जनि झूलो रसिक शिरोमनि नीद सों नैन पिराइ ।
झोंका देत न सकति अलीगन झुकि झुकि खसति जम्हाइ ।
चन्द मन्द ढुरि हेरत हिरनी मोतियन माल सिराइ ।।
करत शोर चहुँओर मोर पिक रजनी के अन्त जनाइ ।
कहति जनकजा सुनु पिया 'रघुवर' झूला देहु थम्हाइ ।।

पद १०१

झूलें दोउ साजन साज हिंडोर ।
रंग रहस अनुराग रसीले हँसत हँसावत प्रिय मुख मोर ।
झोंका देत लली लालन जब प्रीतम रस बस करत निहोर ।
'प्रीतिलता' अनुराग राग सुनि झूलत झुलावत ह्वै गयो भोर।

आरती पद १०२

आरती झूलन की कीजै, मधुर छबि नयनन लखि लीजै ।। लली लालन राजै भरि प्यार, सु नखशिख सजे सुभग शृंगार मदन मद तजै, सूर शशि लजै, डोल छवि छजै, बलैया बार बार लीजै । नींद बस कबहुँ कबहुँ झुकि जात, सखिन तन हेरि सकुचि मुसुकात, बिहंसि जब जोहै, नयन मन मोहै, धरै धीर को है, सखिन हिय प्रेम बारि भीजै ।। अरुण अँखियाँ सोहैं अलसात, अँगैठी लै लैके जमुहात, अधिक निशि झूलै, प्रेम रस भूलै, परम सुख मूले, निछावर तन मन करि दीजै ।। झूलन की झाँकी तजी न जाय, नयनमाँ अधिक अधिक ललचाय, प्रेम रस रसै, युगल जो लसै, उर अन्तर बसै, तबहिं 'रसकान्तिलता' जी जै ।।

झूले से महल गमन पद १०३

रसिक दोउ झूलि कुंज को जात ।
रघुनन्दन श्रीजनकनन्दिनी करत रसीली बात ।
अंशन भुज दीने पिय प्यारी मन्द मन्द मुसुकात ।
'रसिकअली' रसबस दोउ लालन आनन्द उर न समात ।।

पद १०४

रसिक वर झूलि के महल चले ।
प्यारी भुज प्रीतम गर डारी पिय भुज प्यारी गले ।
हँसत हँसावत रस बरसावत झूलन रंग रले ।।

मनहुँ मनोरथ बेलि अलिन की आसहिं सुफल फले।
'रसकान्तिलता' सुख सैन करावन चले सब रंग महले॥

पद १०५

पड़ल हिंडोरा देखो कदम की डारी रामा।
हरि हरि झुलि रहैं अवध विहारी रे हरी॥
रहि रहि झोंका मारे श्रीजनकदुलारी रामा।
हरि हरि गावैं सखिजन सुकुमारी रे हरी॥
अलकै बदन पर झुमैं घुंघुरारी रामा।
हरि हरि उदै मानो चन्दघन टारी रे हरी॥
मोहनी कहति यह अरजी हमारी रामा।
हरि हरि हिय बसो दोऊ पिय प्यारी रे हरी॥

पद १०६

आज तो अवध सैंयाँ झमकि झुलाऊँगी॥
मीठी मीठी तान गाय मन्द मन्द मुसुकाय,
झोंकन की मारि हिय सुख न समाऊँगी॥
लट सुर झरझैहों मन आपनो री,
कंठ सो लगाय हिया तपनि बुझाऊँगी॥
पान को पवैहौं ताकी उगल न पैहौ आली,
मोहनि बदन लखि सुख न समाऊँगी॥

पद १०७

मिथिला के भाग आज झुलै, सावन की महिनमा।
झुलै अनुराग भाग विहँसि विहँसि दोउ लै,

सिया के सोहाग आजु झुलै ।।सावन०।।
सुर मुनि शिव ध्यान झुलै भक्ति भगवान झुलै,
मेरे तो मेहमान आजु झुलै ।।सावन०।।
रघुकुल कमल झुलै नयन प्रतिफल झुलै,
हम सब सुकृत आजु झुलै ।।सावन०।।
दुलहा मनभावन झुलै, सिया संग कमला झुलै,
दोऊ सुफल आजु झुलै ।।सावन०।।
दै दै गलबाहि झुलै जुरि जुरि दृगन हँसि फुलै,
सरस संत हिय में सदा झुला ।।सावन०

पद १०८

झुलैला राजा रनियाँ हिंडोरवा ।
बड़ी बड़ी अँखिया में कजला कटीलो ।
जुलुम चितवनियाँ रे, चोखे कोरवा ।।
काली काली केशिया जेसे लहरैं, नगिनियाँ ।
मन्द मुसुकनियाँ रे, लाली ठोरवा ।।
उझकि उझकि झुलैं अमवाँ की डारी ।
कमर लचकनियाँ रे, बाँका छोरवा ।।
सरस संत अरुझे दोउ झुलै,
रसिक पटरनियाँ रे, मनचोरवा ।।

पद १०९

झुलैले राजा रनियाँ रे, हिंडोरवा ।
काले काले पीलेपीले घेरे बदरवा,चमकै दामिनियाँ रे,चहुँओरवा

सरयु की तीर कदमियाँ की डारी,
झमकि बरसै पनियाँ रे, नाचे मोरवा ॥
झमकि झुलावै सखि झुकि झुकि गावै,
कजरी ढुन मुनियाँ रे, रस वोरवा ॥
सरस संत छबि कहि न परै जब,
झुलत सिया धनियाँ रे, चितचोरवा ॥

पद ११०

प्यारी झुलैं री आली प्यारे झुला रहे हैं।
रेशम की डोर ऐंचत श्रम बिन्दु छा रहे हैं ॥
झीने वसन सिया के फहरात झाँकने पर।
पिय कंज कर सँवारे मनमथ लजा रहे हैं ॥
भुज अंश धारते हैं क्या शौक से छबीलो।
गाना सुना सुना कर प्यारी रिझा रहे हैं ॥
हँसती हैं मैथिली जब सन्मुख पिया के होके।
लखि 'रूपलता' प्रीतम बलिहार हो रहे हैं ॥

पद १११

पिया धानी दुपट्टा रँगा दे रे।
आन देश प्रद मैं नहिं पहिरौं, मिथिला खास मँगा दे रे।
मोतिन की लर छोर गुहादे, मोर पपीहा लिखा दे रे ॥
अंजन राग महावर दै कै, निज कर कमल उढ़ा दे रे।
नाम 'विहारिनि' मुग्ध अली को, हँसकर कंठ लगाय ले रे ॥

चलने के सखि बचन पद ११२

सजन चलो झूला झूलै श्रीसरयू कुले ।
सावन परम सोहावन आवन, पावन ऋतु सुख मूले ।।
सुनि प्रिय बैन नैन लखि सिय मुख, बोले पिय अनुकूले ।
अँग अँग भूषन दोउ साजे, नील सुपीत दुकूले ।।
बैठे बिमल हिंडोल चायचित, गर बहियाँ दै दूले ।
छके परस्पर रूप सुधानिधि, हरत त्रिविध भव सूले ।।
झमकि झमकि झुकि झुकि झोकन दै, सखिन सुमनहूँ फूले
'युगल बिहारिणि' रसिक राम प्रिय झूलत दोउ सुखमूले

पद ११३

झुलैहौं साजना तोको झूला ।
झूलत छबि अवलोकि अङ्ग अङ्ग, मैं सब शोक भुलैहौं ।
दंपति केलि कला कौतुक लखि, हिय कल कमल फुलैहौं ।
जब प्यारी गलभुज हँसि धरिहैं, उपमा कहुँ न तुलैहौं ।
चंचल चख चमकाय सुचित हरि, निज ढिग मोहिं बुलैहौं
'जुगल विहार' बहार प्यार लहि, बिनहीं मोल बिकैहौं ।।

❀ रक्षा बन्धन ❀

पद १

आजु महा मंगल छबि छायो ।
दशरथ सहित कौशिल्या रानी सावन सित पूरुन तिथि भायो
लै लै राखि सब कर कंजन पुरतिय के द्विज गुरु संग आयो ।

पुर द्विज गुरु राम मातु ढिग बृन्द बृन्द आयो छबि छायो।
कोशिल्या कर राखी विधिवत बाँधि सबै पुनि दक्षिणा पायो
बंधवाई तिमि पुत्र वधुन कर तिमि नृप पुत्रन कर बँधवायो।
'रसिकअली' बड़ आदर लहि सब आशिष देत चली हरषायो

पद २

कनक भवन उत्सव मुद आजु।
शुभ बासर सावन सित पूरन तिथि शुभतिमि त्यौहार सुआज
प्रथम सुयश प्रमानिक पुर के द्विज सुत आयो सुसमाज।
तिन की पत्नी सिय ढिग आई, वयस मधुर छबि भ्राज।
वेद विहित राखी कर बाँधे, जनक सुता रघुराज।
पूजि सकल बिधि सिय रघुनन्दन आशीष लई मन काज।
मुदित गये घर सकल प्रसंसत अलि सब सिय ढिग साज।
करि कौतुक दुहुं सबहिं हँसावत 'रसिक' हास रहि छाज।

पद ३

सखी लखु रक्षा बंधन आजु।
पिय प्यारी के कर कमलन में बाँधि रहे द्विजराजु।
वेद मंत्र पढ़ि पढ़ि हरषित हिय निरखत युगल समाजु।
'प्रेमलता' दक्षिणा न्यौछावरि लेन चले निज काजु।

❋ जलबिहार झिझरा ❋

पद १

खेलत नँहरें नवारी लाल।
श्री सरयू परिखा मिलि आई, पूरब कोट के नाल॥

मधुर मोरपंखी ता ऊपर, बैठे युगल कृपाल।
चमर छत्र विजनादिकनहिं अलि, छबि लखि होत निहाल
पूरब तट प्रमोदबन कुँजन, निरखहिं अलि छबि जाल।
आनि फँसे दृग मीन सबनि के, 'युगल प्रिया' सुविशाल ।।

पद २

श्री सरयू बिच विमल विहरें।
प्रीतम प्रिया सपरिकर सुन्दर, करत उछाह हजारें ।।
नाना रङ्ग जटित मुक्तामनि, नाव अनूप अपारें।
अमित भांति कल कान्ति कलावित, घूमन माँझ सँवारें ।।
पुरबासी सानन्द विलोकहिं, लीला ललित उदारें।
ह्वै रह्यो गान तान नृत्यादिक, रसिक जनन हितकारें ।।
नवल नैनजा नीर निहारहिं परसि सनेह सुधारें।
जय जय धुनि परिपूरि रह्यो तिन, सुमन सुबृष्टि बहारें ।।
जल विहार करि आय सुखद तट, दिये बहुदान पियारें।
'युगलानन्यशरण' झूलन मधि, मच्यौ मौज मनि वारें ।।

पद ३

दोऊ जल विहरन हेतु चले।
नौकारुढ़ समाज सखीजन, सब सामान भले।
गान तान सनमान सोहावन, पावन प्रेम पले ।।
सरजू देखि सिया रघुवर, गलबाहीं रङ्ग रले।
अति उमंग सों रंग ढंग लहि, तरल तरंग तले ।।

भादव भल भावन हरिबासर, शुक्ल सोहाग फले।
नाव नावरी खेल खिलारी, 'जानकीवरहिं' मिले।।

पद ४

खेलत नाव नावरी रघुवर ।।
सीय समेत सखी सुख राजत, साजत भूषण बसन तरह वर
ध्वजा रंगीन पताका फहरत, लहर लेत श्री सरजू ऊपर ।।
विछे विछावन अति मन भावन, नाचत गावत जयति जयति
कर। लूट लुटावत रंग बरसावत, लाल रतन बहु बरषत
मन भर ।।

पद ५

श्यामा श्याम की बलिहारि ।
भई सुरुचि जल सरयू बिहरैं, खेलैं नाव नवारि ।
नभ सघन घन वन सु छायो, स्वच्छता वर वारि ।
सजि सुनाव सिंहासनो पर, सोहै प्रीतम प्यारि ।।
श्री चन्द्रकला चन्द्रा चन्द्रानना, सकल सौज सँवारि ।
जस श्री जानकि जान सखी, जलयान गान सुधारि ।।
नाव नाव मिलाव छिन पल, भल सु लेहु बिचारि ।
'जुगलबिहारिनि' पर अपर सब, मत मतान्तहि वारि।।

पद ६

झिझरी खेलि रहे सरयू में सिय संग अवध बिहारी ना ।
रतन खचित मनि नाव बनी है, छज्जे में चाँदनी तनी है,
फर्श मखमली छटा छनी है, मनहर बूटेदारी ना ।।

विमल सलिल सरयू सरि सोहैं, विविध रंग पंकज मन मोहैं,
भ्रमर गान सुनि विहंग नटो हैं. दादुर धुन सुखकारी ना ।।
चहुँदिशि रंग रंगीली बाला,कोउ लिये पान इत्र कोउ माला,
मध्य सिंहासन पै सियलाला, मनसिज रति मद हारी ना ।।
कोउ सखि बीन बजावै गावै, लली लाड़िले के मन भावै,
'कान्तिलता' रस सिन्धु समावै, अवसर की बलिहारी ना ।।

पद ७

सजनी विलोकु आज आनन्द अपार है ।
सिया रघुरैया करैं नौका पर विहार है ।।
तोरन बितान ताने बाँधे बन्दनवार है ।
दम्पति की दिब्य ज्योति जागैं जगमगा रहे।।
दरशक गन निज निज नाव पर सवार है ।
झूमि झूमि झाकैं सदा झाँकी मजेदार है ।।
सुरन विमानन से निरखैं बहार है ।
सुमन बरसि 'मोद' करे जय जयकार है ।।

पद ८

रसे रसे नौका को चलावो राम रसिया ।
डगमग करै क्यों अनारी अवधेसिया ।।
अति सुकुमारी सिय प्यारीजू हमारी प्यारे।
तरल तरंग चले सरयू की तीब्र धार,
रोको-२ प्यारे ना तो हो जैहैं अजसिया ।।

चतुर चूड़ामनि गिराय पाल रोक डारी,
अतिहि उमङ्ग प्राण प्यारीजू को अंकधारी,
मारे 'मोद' कलिका पै विहँसनि असिया ।।

पद ९

अरे रमा भादों के महिनमा सियाजू खेलें झिझरी ।।
बनी चन्दन की नैया हीरा मनि पटरी ।
ऊपर तनेउ चँदोवाँ चहुँदिशि झलरी ।।
तापै रतन सिंहासन छबि छाई उजरी ।
राजै अवध ललन मिथिलेश दुलरी ।।
पिया के श्यामल अङ्गनमा जामा धोती पियरी ।
गोरी स्वामिनी सिया के सोहे लाली चुनरी ।।
सिया के शीश पर चन्द्रिका बंदी मणिन जरी ।
प्यारे राघव सजनमां सिर सोहे पगरी ।।
दोऊ बैठे हैं परस्पर भुज अंसन धरी ।
पिया उर मनिमाला सिया उर तिलरी ।।
सर तिरछी तकनियाँ सिया नोकनि गरी ।
मन्द मन्द मुसुकनमां गरवा डारे फँसरी ।।
बाजा बाजत मृदंग बीणा झांझ खँजरी ।
रस रंगनि भरी है सखी गावें कजरी ।।
छबि युगल निहार भूली तन खबरी ।
खेवन वाली मतवाली केवटा के छोकरी ।।

बहे अति पुरवइया उठे सरयू में लहरी।
करे ठगमंग नैया डरे आली सगरी॥
लखि सखीन की ओर प्यारी सैन करी।
उठि के प्यारे रघुनन्दन पतवार पकरी॥
देखि सखियाँ निहाल जय जयकार उचरी।
अलि 'नेहशीला' सुमन अकाश से झरी॥

❀ झाँकी उत्सव ❀

पद १

छबीली चलु री कुंज लतान।
झुकि रहे डार फूलि रही लतिका, करत भँवर रस पान॥
आगम निसा सरद की सोभा, प्यारो दृग ललचान।
फँसन चहत अलि कमल कोश में, प्रीतम नेह लुभान॥
निरखि बदन ससि गगन चन्द्रमा, लज्जित है सकुचान।
खिलन चहत कलियाँ कुमुदिनि की, 'मोहनि' रस पहिचान॥

पद २

साँझ समय साँझी पूजन को निकसी जनक दुलारी।
हाथन फूलडली अलि बातन, साथन सुघर कुंवारी॥
चली भली छबि रूप पली सब, चुनन सुमन कलिकारी।
'कृपा निवास' बाल हंसन सी, बिहरत मुक्तन धारी॥

पद ३

साँझी साँझ बनाय किशोरी।
प्रमुदित मन अलियन दिखरावति हँसि२करधरि हिय उमगोरी

आय अचानक प्रीतम प्यारो मृदु हँसि बैन कह्यो रस बोरी।
प्यारी कर की 'मोहनि' साँझी नव रचना बरवस चिपे चोरी।

पद ४

भली रचना प्रीतम बस कीनी ।।
प्यारी निज कर कमल चतुरई, करि टोना पढ़ि दीनी ।
कुन्ड बिहार झुन्ड अलियन युत, पियहूँ को संग लीनी ।
जल बिहार मिस प्रीतम बस करि, तकि अँखियन रंग भीनी
प्रभा प्रेम बिच 'मोहनि' अरुझी ज्यों जल महियाँ मीनी ।।
झुकि रहे अम्ब कदम्ब चहुँदिशि ऋतु बसन्त मद छीनी ।
कोकिल मोर कुहूकत निरतत, फैलत रंग नबीनी ।।
तरु तगाल पर 'लता प्रेम' की चढ़ि ओढ़ी पट झीनी ।।

पद ५

सरस साँझी सुभग सखिन सरसावहीं ।
महल मोहन मधुर चित्र श्री बाग वन,
सरयु तर तीर शुचि घाट दरसावहीं ।।
कबहुं गिरिराज कल कूट मन्दिर विपुल,
आवरन रंग रस रूप छबि छावहीं ।।
भाव चित चाव अनुभाव मण्डित विविध,
वरन हिय हरन सिय लाल मन भावही ।।
सुभग साँझी सुधा सरिस उत्सव सगुन,
गाय 'अलियुग्म' पट प्रेम परसावहीं ।

पद ६

विविध सुमन मय साँझी बनावत ।
रघुनन्दन अरु जनक नन्दिनी,
अरस परस दोउ मुद उपजावत ।।
पिय के चित्र सिया रचि सिय के,
रचि प्रीतम विपिनादि सुहावत ।।
महल विचित्र सिंहासन ऊपर भोग
समाज सकल दिशि पावत ।।
मनिमय दीप प्रकाश विराजत,
गान तान प्रमोद बढ़ावत ।।
'रसिक' चित्र दोउ लखत परस्पर,
आनन्द प्रेम उमगि उर छावत ।।

पद ७

रघुनन्दन अरु जनक कुमारी ।
शरद भवन बैठे सुख आसन, सखियन को सुखकारी ।।
मणिमय साँझी रचत नवल दोउ, बहु प्रकार मुदकारी ।
राज सुसाज समाज अनी बहु, गज हय चित्र अँटारी ।।
सिय के चित्र चारु प्रीतम रचि, प्रीतम के रचि प्यारी ।
अद्‌भुत अनुपम निरखि अलिन उर, नेह सरस रसकारी ।।
सिय के चित्र देखन रघुबर गये, पिय के जनक दुलारी ।।
'रसिक' मिले भरि अंक उमगि उर, प्रेम दृगन चलवारी ।।

पद ८

चलु सखी साँझी निरखन माई।
रचना बिपिन प्रमोद आदि सब, देखत अति सुखदाई॥
युगलघाट अभिराम मनोरह, ललित लता सुन्दर छबिछाई।
महि सोपान कुँज युत रचना, रत्न वेदिका विविध बनाई॥
नवसत सजि श्रृँगार सखी तन, गावत चली उमगि हरषाई।
'सियरसिकअली' हिलिमिलिदेखनहित,नवलबधूटी सब जुरिआई

पद ९

सिय जू साँझी साँझ बनाई।
अद्‌भुत रचना देखि प्रिया की, मन हरषे रघुराई।
धनि कर कमल धन्य चतुराई, मधुर विचित्र सोहाई।
कहुँ प्रमोदबन कहुँ विचित्र बन, कहुँ सुभूमि हरिआई।
सरजू तीर नीर भल सोहत, मोहत मन ललचाई।
मनिमय घाट सुवाट हाट लखि, 'जानकीश' मन भाई॥

पद १०

साँझी अद्‌भुत सियजू बनाई।
जो श्रुति सुनी न दृग नहिं देखी सो रचि प्रगट देखाई॥
श्री मिथिला श्री चित्रकूट, श्री अवध सु अनुपमताई।
कमला मन्दाकिनि सरजू मिलि, विलग विलग दर्शाई॥
हाट वाट घर घाट ठाट सब रचना बिविध सोहाई।
कंचनवन बन राम काम प्रद, बन प्रमोद सुघराई॥

चौरासी लख योनी छोनी, अनहोनी होनी प्रगटाई ।
सबथल निज सिय पिय सहित लखि, केलि करत हरषाई ।।
तब श्रीचन्द्रकला कुशला प्रिय प्रीतम पास पठाई ।
ह्वै वरखास सभा कुञ्जहिं से, लाल लली ढिग लाई ।।
अचरजमय रचना लखि पूछत, केहि कृत कहु समुझाई ।
हम अस कतहुँ न लखे ब्रह्मगति, चतुरानन चतुराई ।।
तब एक मुग्ध सखी लखि पिय तन, प्रिय दिशि नैन चलाई ।
हँसि गहि अंक मयंक बदन निज, चख चकोर रस पाई ।।
यह प्रज्ञा केहिके ढिग लहि, बोली मृदु मुसुकाई ।
'युगलविहारिनि' श्रीसतगुरु प्रद, यह सब है प्रभुताई ।।

पद ११

निजकर ते साँझी रचि प्यारी, चन्द्रकला पिय पास पठाई ।
सुन्दर बन प्रमोद बिच रचना, रची अनूप बरनि नहिं जाई ।।
प्रथम समागम फुलवारी लखिमृदु हँसि ललकि प्रिया उरलाई
सुरति तरंग बढ़ी तेहि औसर, लम्पट अँखियाँ रहि असझाई।।
परसत अंग उमंग मदन की, नव उत्साह सूरत चित आई ।
नैनन ही में केलि पसारी, नव रस स्वाद नैन ही पाई ।।
यह सुख लखति सखी नैनन ते, नेह समुझि अँखियाँ सकुचाई।
इत'मोहनि' उत मोहन नागर, ठगि गये लखि साँझी सुघराई।

पद १२

निज कर प्यारी साँझी बनाई ।
उत मनिमय मनिपर्वत झलकत, इत सरयू लहराई ।।

कहुँ कहुँ सघन द्रुमन की पतियाँ, कहुँ लतिका झुकि आई।
कहुँ इत उत सारस बन डोलत, कहुँ मोरन छबि छाई ।।
निरखि अलौकिक रचना प्रीतम, हँसि तिय कण्ठ लगाई ।
उत साँझी इत पिय प्यारी मिलि,'मोहनि' छबि दरसाई।।

पद १३

नवल रसिया नव साँझी बनाई ।।
नवल बाग नव कुँज मनोहर, सरयू कूल सोहाई ।
नवल प्रिया के रूप रचे तँह अँग अँग छबि छाई ।।
तापै नवल सिंगार सुमन के, सो छबि कहि नहिं जाई ।
नवल रूप अपनो रचि प्रीतम, नवल प्रेम दरसाई ।।
प्यारी भुज अपने गर डारयो, निज भुज प्रिय गर लपटाई ।
'सियाअली' जनु द्वैत रूप बिच, एक हार पहिराई ।।

पद १४

साँझी झाँकी अलिन रचावति ।
कनक भवन अरु महल बागके,कुँज रौसके चित्र दिखावति ।
अष्ट कुँज सरयू सरिता के, घाट वाट चहुँदिशि दरसावति ।
श्रीप्रमोदवन कुञ्ज निकुञ्जन, षटऋतु की शोभा सरसावति
सेज रहसविपरीत चित्र लखि,प्यारी पिय निरखत सकुचावति
कबहूँ व्याह साज मण्डप रचि, कबहूँ कोहबर नकल उतारति
रहस रास के मण्डल भाँवरि, नृत्यकला कोटिन सजि लावति
बहुबिधिसखिरचि बाँकी झाँकी,पियप्यारी को निरखिरिझावति
साँझी रहसआली रसिकन बिनु,नहि उरआवति भावति छावति
'मोदलता'अलि लाड़ प्यार करि,युगलललन को निशिदिनगावति

पद १५

होड़ मची है पिय प्यारी में, चित्रकला में को अधिकायो ।।
नागरि चित्र सँवारति पिय को,लाल सिया को चहत बनायो
प्रथम सोमवट रच्यो नागरी, तेहि पर च त्वर रास रचायो ।।
तेहि पर नटवर नागर बिरचित, लैकर वीन प्रवीन बनायो ।
मधुरी हँसनि रसीली चितवनि, पियजू की सिय सब दरसायो
भूषण वसन सहित अंग सुषमा,सिय की लाल सही रचि पायो
नयन हँसीहैं बदन लजौंहे, रचन चहो पर एक न आयो ।।
हँसति ठठाय अली ताली दै, हार समुझि पिय अधिक लजायो
जनिसकुचहु रस अधिक लहहुगे'कांति' लाल को सकुच छुटायो

पद १६

साँझी शरद बिलास की सखि आरती करिये ।
छबि दम्पति सुख रास की नखसिख उर धरिये ।।
साँझी सुमन सचित्र सजायो,दम्पति लखि लखि अति सुखपायो
नवल नेह दोउ उर उमगायो, हास बिलास हुलास की ।।
अरस परस गरभुज लपटावै, चितवनि मुसकनि रस बरसावै,
आनन्द अधिक अधिक अधिकावै, बाढ़त प्रेम पियास की ।।
छत्र फिरत विजनादि ढुरत हैं झाँझ घण्ट घड़ियाल बजतु हैं,
जय जय धुनि पुनि पुनि उचरतु हैं, प्रेमानन्द निवास की ।।
आरति करि जल पट परसतु हैं,पुष्पाँजलि सखिगन बरसतुहैं,
'कांतिलता'पिय चित करषतुहैं,बलि बलि दोउ रस रासकी ।।

॥ श्रीसीतारामजी ॥

❀ बारह मासा ❀

चैत्र छन्द पद १

मेरे राघो विहारी सँवरिया हो,आओ प्रीतम हमारी अटरिया हो

मधुमास तेरे जन्म का उत्सव मनाउँगी ।
ढाढ़िन बुलाके खूब मैं नकलें कराउँगी ॥
सखियों के साथ मिलके सोहिलो गवाउँगी ।
तेरे मुख पे बार बार अशर्फियाँ लुटाउँगी ॥
भरि जइहैं खुशी से नगरिया हो ॥मेरे राघो०॥

बैशाख पद २

वैशाख तुझे बर्फ के जल से नहलाउँगी ।
हर चारो तरफ खस की टट्टियाँ लगाउँगी ॥
चन्दन अंगूर अनार का शर्बत पिलाउँगी ।
सन्ध्या को सैर बाग की तुमको कराउँगी ॥
जहाँ जल भरि सीतल नहरिया हो ॥मेरे राघो०॥

जेठ पद ३

पुनि जेठ मास फूलों का बँगला बनाउँगी ।
हर चारों तरफ फूलों की कलियाँ लगाउँगी ॥
फूलों का करि सिंगार मैं उसमें बिठाउँगी ।
फूलों का चमर छत्र वो पंखे चलाउँगी ॥
लखि छवि नहीं टरिहैं नजरिया हो ॥मेरे राघो०॥

अषाढ़ पद ४

घनगर्ज सुधि अषाढ़ की जब मैं डेराउँगी ।
झट दोड़ के चरणों में तेरे लिपट जाउँगी ॥
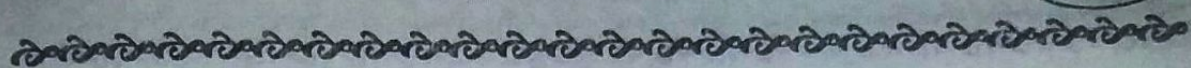
तब हाथ धरि हृदय में धड़कन मिटाउँगी ।
ऐसे ले सारी रैन तेरे संग ब्रिताउँगी ।।
पिया जब तक न होइहैं सबेरिया हो ।।मेरे राघो०।।

सावन पद ५

सावन बहारदार हिंडोला गढ़ाउँगी ।
सजके सिंगार प्यार से तुमको झुलाउँगी ।।
गाउँगी मैं मलार वो तुमसे गवाउँगी ।
दिखला के हाव भाव मैं तुमको रिझाउँगी ।।
बरसै हो मैं रस की फुहरिया हो ।।मेरे राघो०।।

भादो पद ६

भादों में नदी तट पे तुम्हें लेके जाउँगी ।
जहाँ खूब ठाट बाट से नौका सजाउँगी ।।
हर चारो तरफ नाव पर तुमको घुमाउँगी ।
मुखचन्द लखि तुम्हार ना फूली समाउँगी ।।
तुम देखि हो नदी की बहरिया हो ।।मेरे राघो०।।

आश्विन पद ७

आश्विन के प्रथम पक्ष में साँझी बनाउँगी ।
जिसमें कि भाँति भाँति के नक्शे दिखाउँगी ।।
फिर रास शरद रैन में अद्भुत रचाउँगी ।
करि नृत्य गान तान मैं तुमको लुभाउँगी ।।
तब जइहो मेरी बलिहरिया हो ।।मेरे राघो०।।
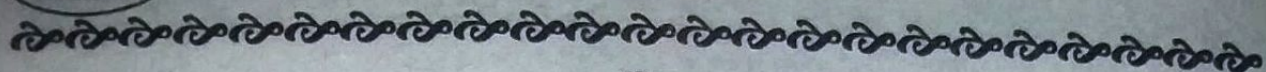
कार्तिक पद ८

कार्तिक दिवाली रैन महल जगमगाउँगी ।
चौपर कभी शतरंज गंजीफा खेलाउँगी ।।
हर बार सनम प्रेम की बाजी लगाउँगी ।
जीतूँगी बार बार मैं तुमको हराउँगी ।।
रीझिहो देखि मेरी होसिरिया हो ।।मेरे राघो०।।

अगहन पद ९

अगहन में प्रीतम आपको दूल्हा बनाउँगी ।
भूषन वसन विवाह का तुमको पेन्हाउँगी ।।
सिर मौर हाथ पाँव में मेंहदी लगाउँगी ।
भोजन के समय गालियाँ सुन्दर सुनाउँगी ।।
तब होइहैं बड़ी मजेदरिया हो ।।मेरे राघो०।।

पूस पद १०

ऊनी गलीचे मखमली गद्दे बिछाउँगी ।
कश्मीर के पशमीने का चादर ओढ़ाउँगी ।।
गरमा गरम बादाम का हलुआ खिलाउँगी ।
सर्दी से पूस मास में बेशक बचाउँगी ।।
जराल गिहें न ठंठी बेयरिया हो ।।मेरे राघो०।।

माघ पद ११

प्यारे बसंत माघ में तुमको खेलाउँगी ।
मंडप में सभी साज बसंती सजाउँगी ।।
फूलों का बना गेंद मजे से चलाउँगी ।

गालों में जब गुलाल के बिन्दे लगाउँगी ।।
हिये उठिहैं खुसी के लहरिया हों ।।मेरे राघो०।।

फागुन पद १२

फागुन में बड़ी धूम का फगुआ मचाउँगी ।
कुमकुम अबीर गुलाल के बादर उड़ाउँगी ।।
रोली लगा कपोल में रंग से भिजाउँगी ।
सारी पेन्हा के तुमको मैं नारी बनाउँगी ।।
नहीं चलिहैं तनिक बरजोरिया हो ।।मेरे राघो०।।

❁ विजय दशहरा ❁

पद १

जात दशहरा चौक सजेरी ।
धरि तनपट भूषण कंचनमनि सजि सिरपर मनिताज मजेरी ।
लै धनुवान तून कटि पै रचि चढ़िचढ़ि चहुँ सिरमौर गजेरी ।।
श्वेत छत्र श्रीराम कुंवर पर ढुरत चवँर फहरात धजेरी ।
'राम स्वरूप' राजनन्दन लखि नर नारिन धन धाम तजेरी ।।

आरती पद २

सुभग दशहरा चौक में आये पिय प्यारी ।
आरति करि भरि नयन सुछबि सखि नेहु निहारी ।।
विश्व विमोहन विश्व विजय कीरति विस्तारी ।
तिन पिय को हिय जीति विराजत जनक दुलारी ।।
विजय निशान सुगान सहित जय जय धुनि छाई ।
नाचि नाचि 'रसकान्तिलता' पुष्पन झरि लाई ।।

पद ३

कनक पीठ राजत पिय प्यारी ।

आश्विन सित त्यौहार विजय तिथि, दशमी शुभ सुखकारी ।।

चँवर छत्र सौंजे विज्जन वहु, आस पास अलिधारी ।

राम रमनि अगनित तहँ आवति, देखि सुभेंट जुहारी ।।

आई कोटिन शारद शचि रति, रमा उमादिक सारी ।

लोकपाल विवुध बनिता बहु, चन्द्र दिवाकर नारी ।।

विविध भाँति उपायन अगनित, लेकर आई झारी ।

धरि धरि भेंट जुहारत सन्निधि, दम्पति छबि दृगचारी ।।

रूप निहारत प्रेम शिथिल तन, हिय चख मनसि विकारी ।

अति सुखसिन्धु मगन सबके चित्त, 'रसिक' रूप रस वारी ।।

पद ४

आज तौ विजय तिथि दशमी आश्विन मास,

शुक्ल पक्ष पावन नव संवत की भाई है ।

विजयी रघुलाल विजय भामिनी सिय जू संग,

कनक सिंहासन राजैं शोभा अधिकाई है ।।

चहुँओर चोपदारी ठाढ़ी कनक दण्ड धारी,

करत जुहार ताहि देत विदिताई है ।

'रसिक अली' देवकन्या नागकन्या, नरकन्या,

सियाजू को भेंट दै दै वंदति सुखदाई हैं ।।

पद ५

आज रघुराज रानी सीता पटरानी जू लौं,

विजय त्यौहार भेंट लैके आई है ।

चारो दिशा, देशराज कन्या देवकन्या सबै,

कन्या नागराज हूँ की राघव विवाही है ।।

निज निज देश देश लोकनि की चीजें चारु चौंप,

हित चातुरी मनातुरी सोहाई है ।

करिकै जुहार व्यवहार चारु चाह रीति बैठी,

अपार सभा चीजें को गनाई है ।।

पद ६

अवधपुर सरस दशहरा माई ।

बैठे मनिमय दिव्य सिंहासन सीय सहित रघुराई ।

मागध सूत बन्दि विरुदावलि, बदहिं विचित्र बनाई ।

विप्र बृन्द मुद देन यवाँकुर, शीश धरहिं हरषाई ।।

गज रथ तुरंग विपुल वाहन, वाहनी सुसाज सजाई ।

श्रीमहराज कुमार सामुहे, खड़े सु रंग रंगाई ।।

ह्वै रह्यौ गान तान दशहूँ दिशि, दान मान सरसाई।

निरखैं नीलकण्ठ सिय रघुवर, भ्रातन सह सुखपाई ।।

महाउछाह नगर महलन मधि,अति आजरज दिखाई ।

'युगलानन्य शरण, अनुदिन बहु, होय उमङ्ग बड़ाई ।।

पद ७

युगल छबि आज न कछु कहि जाई ।

सुभग दशहरा चौक बिराजत, सीय सहित रघुराई ।

नवल शृंगार किये नखसिख लौं बहु रतिपति छबिछाई।

छत्र चँवर व्यजनादिक सेवा, लीन्हें सखि समुदाई ।।

बहु सखि मङ्गल भेंट लै आई, अर्पति शीश नवाई।
नीलकण्ठ बहु सखि दरसावति, जब अंकुर बहु ल्याई ।।
बहु सखि गावति साज बजावति, नृत्यति भाव दिखाई।
'प्रेमलता'अनुपम छबि निरखति, अलिगन विजय मनाई।

पद ८

सखि विजय दशहरा आजु री।
सिय रघुवर को सुयश छयो जग, देव दुन्दुभी बाजु री ।।
घर घर यह उत्साह अवधपुर, नर नारी सुख साजु री।
मंगल द्रव्य लिये चहुँदिशि ते, भेंटत पूरन काजु री ।।
गावत गन्धर्व अप्सरा नाचत, लावत कौतुक नाजु री।
'प्रेमलता'यह अनुपम शोभा, निरखत सखिन समाजुरी ।।

पद ९

सुभग दशहरा चौक विराजे रघुबर जनकदुलारी।
छत्र चँवर व्यजनादिक सेवा,सौज लिये आलीन अपारी।
मंगल चौक वितान कलश ध्वज, झालरि वन्दनवारी।
दधि दुर्बा फल फूल जवाँकुर, सजे धरे मनि थारी।
नीलकण्ठ बहु उड़त सु बोलत, निरखि हँसत पियप्यारी।
बाजन साज गान करि नाचत, 'प्रेममोद' बहु नारी ।।

पद १०

लगत विजय शुभ साज सजाई।
रंगमहल अरु कुंज कुंज प्रति, झरत चोघड़े अलिन बजाई ।।
छाइ रही महलन के ऊपर, ध्वज पताक सब जगह सजाई।

द्वार-द्वार प्रति कुंज कुंज मधि,युगल कलश युग चँवर रंगाई।।
तने वितान बादले मखमल, हाट बाट सोइ बसन डसाई ।
धनद निरखि सोइ बसन पाँवड़े,निज धन मद सहजहिं बिसराई
अलिन हृदय उत्साह सरस अति,रंगमहल सब जुरि जुरि आई
महल बजार नगर की शोभा, शेष शारदा कहि न सिराई ।।
रसिक कृपा बिनु युगल रहस वर,आन भाँति नहिं उर दरसाई
'मोदलता' रस सरस माधुरी,युगल ललनकी निशिदिन गाई।

☆ जय सियाराम ☆

राजगद्दी पद १

श्रीरामचन्द्र महाराज सिंहासन राजैं री ।
बाम भाग श्रीजनककिशोरी, सोभा खानि सुभग तन गोरी ।
अति सुन्दर मनि जड़ित दिये सिर ताजै री०।।
राज साज नख सिख लौं राजै,नयन निरखि सबके दुख भाजै
सिर चन्द्रिका प्रभा के आगे, रवि शशि लाजै री०।।
कोटिन काम लजावनिहारे, अंग अंग छटा अपारे ।
चवँर छत्र ढारो प्यारे को, समय सुख साजै री०।।
बार बार निरखहिं तृनतोरी,'ब्यासअली' सिय स्वामिनिओरी
जय जय कहि देव प्रसन्न भये, प्रभु के आगे री०।।

पद २

अलबेलो राजा छत्र मुकुट सिर सोहे हो ।
झुकि अलक कपोलन प्यारी,मानो नागिन सी अतिकारी ।अ०

बहु अतर सुगन्ध सुधार हो, सुकुमार हो घुंघुरार हो, ।अ०
दोउ नैना अजब रसीले, करि डारे तियन कटीले,
दोउ कमल नयन अरुणार हों, रतनार हो कजरार हो ।अ०
सियराम हृहय में हरदम, निस दिन बसिये रघुनन्दन,
यह छबि पर मम मन बार हो, तन बार हो,बलिहार हो ।अ०

राजगद्दी कवित पद ३

आज तो विहार श्रीरामचन्द्र को मुखारबृन्द,
चन्दहुं ते अधिक छवि लाजत सुहाई री ॥
केशर को तिलक भाल गले शोभै मुक्त माल,
घुंघुरारि अलकन श्रवन कुण्डल छवि छाई री ॥
अनिआरे अरुण नयन बोलत अति ललित बैन,
मधुर मुसुकान पर मदन ही हुलजाई री ॥
ऐसो आनन्द कन्द निरखत मिटि जात सुख कंद छब्रि पर,
मन माल कान्हर गई हो विकतई री ॥

आरती ४

आरती करिये सियावर की, नखशिख छवि धर की ।
'लाल पीत अम्बर अति राजे,तिलक ललित भालन पर भ्राजै।
मुख निरखत शारद शशि लाजै, कुम कुम केशर की ॥
कर्ण फुल कुण्डल झलकत है, चन्द्रहार मोतिन हलरतु है ।
कर कंकण दामिनि दमकत है, जगमग दिनकर की ॥
मृदु तरुवन में अधिक लुनाई, ह्रास विलास न कछु कहि जाई
चितवन की गति अति सुखदाई, मनही मन फरकी ॥

सिंहासन पर चौर ढुरतु है, झांझ बजत जय जय उचरत है।
सादर स्तुति 'देव' करत है, कोटिन अनुचर की ।।

विसर्जन आरती पद ५

ललन दोउ मोद विनोद भरे ।।
विजय उछाह मनाय छाय छबि,सखियन मन पिय हरे ।
चहुँ विधि साज बजाय गाय सखि, नटनि कला उघरे ।।
चहत पधारन शयन महल अब, दोउ गर बाँह धरे ।
धूप दीप नैवेद्य अरपि सखि, इतर तमोल सरे ।।
आरति करि सखि लेहिं बलैया, अंजलि सुमन झरे ।
'कांतिलता' वारति तन मन धन, युगल जयति उचरे ।।

❁ रास उत्सव सरदपुर्णनीमा ❁

आचार्य वन्दना पद १

नमो श्रीअग्रस्वामि पद कंज ।
प्रिय बानी रसिकन मनमोदक बधक विपुल रासि रस मुंज ।
रसिकवर्य रसिकन मन मंडन खंड़न असद् विषय भ्रमपुंज ।
नमो श्रीजयति जयति प्रमादवन पिय प्यारी रस रहसि निकुंज
नमो श्रीजयति जानकीवल्लभ नाम रसिक रसना बलिगुंज ।
प्रीती रीति परतीति लली पद, युगल प्रिया हिय तमसि विधुंज
दो०-वन्दौं गुरु परमेश, जिनकी महिमा को कहै ।
थके गनेस महेस, सारद सेष रमेस युत ।।

दोहा-जिनके पद नख प्रभासे, हृदय सु होत प्रकाश।
नसत तिमिर सूझत हिये,सिय पिय रहस विलास।
वन्दौं चन्द्रकला अली, सकल सखिन सिरमौर।
कृपा दृष्टि करि हेरिये, सूझै रहस हलोर॥
वन्दौं चारुशीलादि अली, रूप गुनन की खान।
करुना करि हिय में बसो, उपजाबहु रस ज्ञान॥
वन्दौं श्रीमन्मारुति, जिन सम रसिक न आन।
दया दृष्टि मो पै करो, दरसाबहु रस ज्ञान॥
वन्दौं श्रीमज्जगदगुरु, रामानन्द महान।
रसिकन पंकज के लिये, उदित भानु भगवान॥
श्रीमद्अग्राचार्य वर, सब रसिकन सिरताज।
रसिक सालि हित मेघ ह्वै, बरसायो रसराज॥
वन्दौं तिनके चरन रज, मम धन जीवन प्रान।
निज लघु किंकर जानिकै, उपजाबहु रसज्ञान॥
श्री श्री तुलसी दास जी, भाविक महा उदार।
कलि कुटिल जीव निस्तार हित बाल्मीकि अवतार॥
तिनके पद अरविन्द को, वन्दौं बारम्बार।
कृपा करो दरसै हिये, सिय पिय रहस उदार॥
वन्दौं तुलसी के चरन, जिन किन्हौं जग काज।
कलि समुद्र ब्रूढ़त लख्यो, प्रगट्यो सप्त जहाज॥
श्री नाभा श्री बाल अली, मधुराचार्य धुरीन।

राम सखे हरि रूप सखी, कृपा निवास प्रवीन ।।
रामचरण हरि रसिक अली, युगल प्रिया रसखान
युगलानन्य प्रपन्नजू, और जो रसिक महान ।।
वन्दौं सबके पद कमल, सदा जोरि युग पानि ।
सब मिलि के करिये कृपा,लघुतर किंकर जानि ।।
जय जय जय श्री जानकी, जय जय अवध किशोर।
जय जय नटवर वेषजू, जय रसिकन सिरमौर ।।
राम रूप सम रूप नहीं, राम धाम सम धाम ।
राम चरित सम चरित नहीं राम नाम सम नाम।
बन प्रमोद सम बन नहीं,सरि नहिं सरयु समान ।
राम रास सम रास नहीं, मुनि कोकिल कियो गान ।।
'रमु' क्रीड़ा के अर्थ से, रामहिं रास प्रधान ।
औरन में यह गौण है, रस कवि करत बखान ।।
जो ईसन के ईश हैं, अवतारन अवतारि ।
कारण के कारण अहैं, बरनत वेद प्रचारि ।।
सोई सीताराम हैं, अवध धाम के माँह ।
विहरत सखी अनन्त युत,सिय संग दिय गलबाँह।।
क्वचित रास लीला करत,क्वचित करत जलकेलि
क्वचित सिया संग झूलहीं, क्वचित फाग रसमेलि।
एवं नित्य विहार में, प्रिया प्रेम रसलीन ।
अवध छाड़ि गवनत नहीं, पद भरि रसिक प्रवीन।

मंगल श्रीप्रमोद बन, मंगल ललि औ लाल ।
मंगल सखिन समाज हैं, मंगल रसिकन माल ।।
रास मंडल मध्यस्थं, रासोल्लास समुत्सुकम् ।
सीताराम महँ वन्दे, सखीगण समावृतम् ।।
श्यामां सरोजवदनां, मृगपोत नेत्रीं ।
मंदस्मितां मुरसिजां मृदुमंजु केशीम् ।।
श्रीपाणिपद्म मणिभूषण भावितीङ्गीं
सञ्जीवनीं शरणमेमिच राम रामाम् ।।१।।
श्यामं पिसङ्ग वसनं वनजात नेत्रं
प्राणप्रियं प्रणतपालमपाररूपम् ।
स्मेरं सुधांशु वदनं मणि भूषणाङ्गम्
रामं नमामि वपुषा वचसा हृदाच ।।२।।
गांधर्वेषुच पारगासु सखिषु सर्वासु मुख्यातुया,
दम्पत्योस्सुख स्वाद रागनिरता स्वप्नेन वाच्छापरा ।
यावद्रास विलासकार्यमखिलं कर्त्रीं स्वतंत्रास्तयोस्तां
बन्देन्दुकलां परां सुरसिकाचार्य्यां तु सीता सखीम् ।।३
वन्दे सखी समाजं तं प्रेम रज्ज्वा वशीकृत
बबन्ध क्रीड़मानं यो श्रीरामं रस सागरम् ।
यासां भ्रमरवन्नित्यं भूत्वा भ्रमतिराघवः
चित्तेषु फुल्लकंजेषु काननेषु मुहुर्मुहुः ।।४।।
रास मण्डल मध्यस्थं रसोल्लास समुत्सुकम् ।
सीताराम महं वन्दे सखीगण समावृतम् ।

सुरुचिर जलदाभ भावना भाव गम्यं।
कनक निकरभास्वं जानकी वाम भागम् ।।५।।
महारासरसोल्लासी विलासी सर्व देहिनाम्।
अयोध्याधिपति श्रीमान् रामो राजीव लोचन:
जानक्या सह सप्रीत: क्रीड़ा रस विलम्पट:।
माधुर्य सुख सम्पन्नमुवाचजनकात्मजाम्।
गम्यतां सरयू तीरे मनो मे अतित्वरम्।
इत्युक्त्वा करे धृत्वा जगाम रघुनन्दन: ।।६।।

पद २

जय जय श्रीबनप्रमोद रसिकन सुखदाई।
सरयु तीर दिव्यभूमि लता वेलि रही झूमि,
फूलन प्रति भँवरा अति गुञ्जत मन भाई ।।
कुँज कुँज प्रति अनूप विलसत तहँ युगलरूप,
जनकलली रघुनन्दन मधुर मधुरताई ।।
चन्द्रकला विमलादिक नागरी नवीनी अति,
मधुर यंत्र लिन्हें कोई सप्त स्वर जमाई ।।
गावहिं सब दिब्य तान सुनहिं लाल अति सुजान,
रास सरस भीजि मन्द मन्द मुसुकाई ।।
'अग्रअली' विपिन राज यह सुख तहँनित समाज
जानत कोइ रसिक भेद जिन यह रस पाई ।।
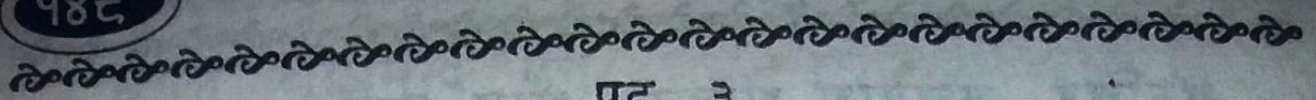
पद ३

जय जय रघुनन्द चन्द रसिकराज प्यारे।
अंग अंग छबि अनंग कोटि वारि डारे ॥
विहरत नित सरयु तीर संग सोहै सखिन भीर।
सिया अंश भुजाडारि अवध के दुलारे ॥
कोई सखी छत्र लिये व्यजन लिये कोई।
युगल सखी चँवर लिये करत प्राण वारे ॥
सुन्दर सुकुमार गात पुष्पमाल सकुचि जात।
परसत भयभीत होत रूप के उजारे ॥
नख शिख भूषण अनूप यथा योग तथा रूप।
कोटि चन्द कोटि भानु निरखत दुति हारे।
मन्द मन्द मुस्कुरात प्यारी संग करत बात।
देखि देखि 'अग्रअली' तन मन धन वारे ॥

पद ४

देखो सखी ! आवत रास विहारी।
सरयू तीर श्रृँगार बिपिन ते, अति अनूप छवि धारी ॥
सीताराम मनोहर जोरी, चितवनि की बलिहारी।
कुण्डल झलक हलक बुलाक की, दलकत हृदय हमारी ॥
संग सखी सोहैं अलवेली, बनी ठनी छबि न्यारी।
सुमन श्रृंगार किये नखशिख लौं, निजकर श्याम सँवारी ॥
प्रभु आगे सखि खेलति आवें, फूलन गेन्द उछारी।
झुकि झुकि लेति परस्पर फेंकति, लखि अनन्द पिय प्यारी ॥

आये दम्पति 'रामचरण' सखि, सुमन श्रृंगार उतारी।
नखशिख मणि भूषण श्रृंगार करि सिंहासन बैठारी ।।

आरती स्वागत की पद ५

स्वागत आरती रास समय कीजै ।
जुगलचन्द्र मुखचन्द विलोकत नैनन सों अमृत रस पीजे ।
लाल सिय रास मंडल आये महाप्रेम आनन्द रस भीजे ।
'जयतिप्रसाद' निवास अली छवि एक पलक न्यारे नही हूजे ।

पद ६

परस्पर पिय प्यारी करत श्रृङ्गार ।
चन्द्रकला अरु चन्द्रमुखी दोउ, देत सुधारि सुधार ।।
क्रीट चन्द्रिका ललित मणिनमय, सिर धरि करनि सुधार ।
जनु घन दामिनि ऊपर राजत, रवि शशि ज्योति अपार ।।
कुण्डल कर्णफूल बुलाक नथ, और विविध मनिहार ।
कटि किंकिनि केयूर जटित नग, नूपुर अति रवकार ।।
नील पीत अति रुचिर बसन तन, पहिरे घूम घुमार ।
नटनि वेष यह सिय रघुवर को, निरखि 'रसिक' बलिहार ।।

पद ७

किये दोउ राजत रास सिंगार ।
युगल सखी सिर छत्र फिरावै युग सखि चँवर सुढार ।।
षोड़श सखी वाद्य सजि चहुँदिशि बीन मृदंग सितार ।
अमित अली नव वरन मनोहर सोभित मंडलकार ।।
'प्रेमलता' करि रास आरती निरतति सुछबि निहार ।।
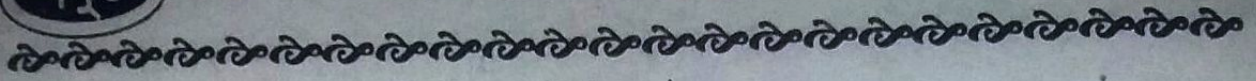
पद ८

सिंहासन राजत सिय रघुवीर।

कोटिन भानु प्रकाश सिंहासन, कोटिन शशि सम सीर ॥

कोटि काम रति छबि निन्दत दोउ, श्यामल गौर शरीर।

मणि बहु भाँति विभूषण भूषित, नील पीत पट चीर ॥

बहु सखि धूप की युक्ति बनावहिं, बहु सखि दीप सजीर।

बहु सखि रचि नैवेद्य लगावहिं, बहु सखि लीन्हे नीर ॥

बहु सखि मुख पोछन पट लिन्हें, बहु सखि लिन्हें बीर।

बहु सखि छत्र व्यजन चामर लिए, बहु सखि करत समीर ॥

बहु सखि बाजन विविध बजावहिं, ताल देत अति धीर।

'रामचरण' सखि गौरी गावहिं, मधुरे स्वर गंभीर ॥

पद ९

सखि जन रास भोग सुख ल्याई।

मेवा मगद सलोने मिश्री पय पकवान मिठाई ॥

जेंवत जानकी रमन कवर करि, करत बिनोद अघाई।

'कृपानिवास अली' जल प्यावति, अचवन करि मुसुकाई ॥

आरती पद १०

रास कुँज रस बरसि रही है, आरति करि सखि हरषि रही है

श्वेत सिंहासन ऊपर राजत, श्वेत चन्द्रिका क्रीट विराजत,

श्वेत हार गर चमकि रही है ॥१॥

विधुवदनी अलि आरति गावति, नृत्य करति प्रियतमहिं

रिझावति, पग नूपुर झम झमकि रही है ॥२॥

श्वेत सुमन सुर तिय बरसाती, मनसिज रति छवि पर बलि जाती, उमा रमा पद परसि रही है ।।३।।
विहँसि वंक पिय सैन करत द्रुम, सखिन चैन मन चपल धरत पग अंग अंग नव रस अरुझि रही है ।।४।।
'सिय बल्लभ' सिय ओर निहारत, पुनि पिय प्यारी छवि उर धारत, छटा माधुरी छिटकि रही है ।।५।।

दुति बचन पद ११

पधारो रास मंडल में, हमारे प्राण संजीवन ।
सरद की यामिनी में, कामिनी सब अंग फुले है ।।
ईन्हैं रस रास से भरिये, हमारे प्राण संजीवन ।
सजाकर रास मंडल को, रंगीली कुँज ललनाये ।।
खड़ी मग जोहती चलिये, हमारे प्राण संजीवन ।
लता रस 'कान्ति' की, सुखी जाति विरह ज्वर से ।
सुछवि रस प्याइये चलके, हमारे प्राण संजीवन ।।

दो०-सखिन सहित सिया लाल तहँ, कीन्ह सोम रस पान ।
सुमन माल पहिराय सखि, अतर करावति घ्रान ।।
ललित सम्हारि अलि, दुहुँ ललन मुख देहि ।
चन्द्र बदन अवलोकि के, तृन तोरि वलैया लेहि ।।

आरती पद १२

करत आरती रास समय की सिय रघुवर की आली ।
चन्द्रमणि सिंहासन पर दोऊ रघुवर जनक दुलारी ।।

विपुल बाजने बजावत अलीगन नृत्यत गाय भली।
युगल जयति ध्वनि झरि कुसुमावलि वलिवलि रसिकअली

पद १३

देखो सखी सरद का दरबार हो रहा है।
आनन्द में सखीजन सरसार हो रहा है॥
चादर बिछी हुई है अत्यन्त श्वेत कैसी,
ज्यों चन्द रश्मियों का अवतार हो रहा है।
दोनों बिराजते हैं हीरों के मंच वर पर,
सुमनों का सब तरफ से उपहार हो रहा है॥
पहने हुये हैं दोनों पोशाक अति धवल तर,
सित पुष्प श्वेत मनिमय शृंगार हो रहा है।
त्यों ही, सखीजनों के भूषन वसन धवल तर,
सब श्वेत द्वीप का सा व्यवहार हो रहा है॥
सारंगियाँ वो वीना कलवेनु बज रहे हैं,
लय ताल से मुरज का धुधुकार हो रहा है।
जो गान कर रही हैं उनकी अवाज के संग,
आनन्द का अधिक तर संचार हो रहा है॥
प्यारी की देखकर छबि लज्जित है रति बिचारी,
प्यारे की छबि से लज्जित अति मार हो रहा है॥
ग्रीवा में है प्रिया के प्रियतम की बाँह आली,
धारन तमाल दल का या हार हो रहा है।

प्यारी के मुख पै प्रीतम निज दृष्टि हैं लगाये,
प्यारे के मुख पै उनका दृग वार हो रहा है ।।
कुछ कह रहे हैं प्यारे, देखो मगर उधर से,
कुछ मन्द मन्द कहकर इनकार हो रहा है ।।
जी में जो आय समझो, इस 'प्रेम' का हृदय तो,
श्रृंगार रस में फँसकर लाचार हो रहा है ।।

परस्पर वारता गजल पद १४

लखि चाँदनी चितचाल सो प्यारी ने यो कही ।
चलिये चतुर चाड़ामणी चित चातुरी गही ।।१।।
रस रास की प्यारी सबै ललना लता सही ।
सींचौ पिय रस रास दै दावन पकरि रही ।।२
जीवन जरी सिय श्याम की वाणी सुधालही ।
ज्ञानाअली, रसकेलि की सरयु उमड़ी वही ।।

श्री प्रियाजू से प्रीतम

दोहा-प्रीतम रास विलास को, मो मन अति उत्साह ।
चलो चलें सब अलिन युत, नव निकुँज के माँह ।।
चन्द्रकले गुन आगरी, तुम हो परम प्रवीन ।
सुन्दर रास विलास के, बाँधो ठाठ नवीन ।।

।। श्रीप्रियाजु सखीन प्रती ।।

सुर मंडल विमला गहे, चन्द्रावती मृदंग ।
साज सितार सुचारूशिला, चन्द्रे तुम मौचंग ।।
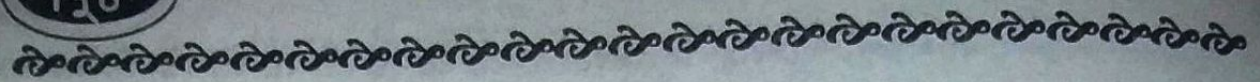
सुभगा मधुर अलापहीं, मदनकला दे ताल ।
अली प्रसादा भाव के, निरखि बतावे हाल ।।

गहे तमूरा लक्ष्मणा, छेमा विशाल खाइवाव ।।
सारंगी हेमा अली, ऐसों बने बनाव ।।

प्राण नाथ बीना गहें, मैं नाचूँ सजि साज ।
नदी बहे पुनि प्रेम की, ऐसो बने समाज ।।

पद १५

या विधि साज प्रबन्ध करो,सखि आनन्द की रसधार बहेगी ।
प्रीतम के मन की रूचि है, यह मेरे हिये अभिलाष पुरेगी ।।
तुम सबही सुख पावों महारस,आनन्द बेलि हिये उमगेगी ।
बरषे घन आनन्द प्रेम महा,तब सहजहि बेली फूलि फलेगी ।

।। श्रीचन्द्रकला जू श्रीस्वामिनीजू से ।।

दोहा-हे मेरी सुख दायिनी, मन की जाननहार ।
हम सब की अभिलाष को, सब बिधि पुरनहार ।
रास साज सजवाय के, सब विधि करब तैयार ।
रस बिलासी प्रीतम प्रिया, हम सब करब सम्हार।

।। सखिगनों से ।।

हे मम प्रान समान अली, सब रास रचो सुख के उपजावन ।
तुम सब साज धरो मिलिके, सबहीं विधि से रतिनाथ बढ़ावन

॥ सखी प्रार्थना प्रीतमजू से ॥

नटो पिय लाल हौ बलिहारी ॥
पइयां परौ रौरी अरजी करत है चुमो गाल पुआरी ।
था थई-२ करि मोहि नाचि रिझावो तब बनिहैं कछु चारी।
तुम नाचो पिय प्यारी गावै, हम सब देहै तारी ॥
दोहा-पिय प्यारी सन्मुख खड़ी कुँजेस्वरी कर जोरी ।
प्रेम सहित कहने लगी, वचन शील रसबोरी ॥

पद १६

नवल रस रास करो पिय प्यारी ।
वन प्रमोद प्रतिकुँज निकुंजनि मन मथकेलि उघारी ।
सजि सिंगार अली गण आई नव यौवन मतवारी ॥
अति अनुराग उमग सबके उरदश दिशि आनन्द भारी ।
सब सखियन भरि नयन दिखायो युगल केलि मनहारी ॥

सखी का गान पद १७

चंचल चपल चतुर नट नागर मोहि लियो मन मोरा ।
है छलिया छल वल बहु जानत इत उत फीरत अनेरारी
जुलफै बदन रहत छीटकाये, मारत बाँके नैनारी ।
वीरी अधर लाल बनाये, बौलै मधुरे बैनारी ॥
मोतिन की गले माला पहिरे पीताम्बर उप रैनारी ।
'रसमाला' यह श्यामल मुरति वसि रहत उर ऐनारी ॥
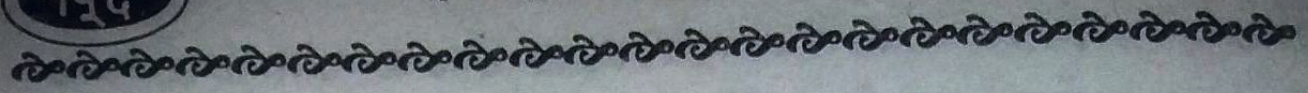
पद १८

आवो जु जनावो गुन प्रगट दिखावो लाल ।
बात न बनावोजु सुनावो सैर तानकी ।।
लावो जनि मान भरमावो मति बातन में ।
रास प्रगटावो गहि पानि सखियन की ।।
छावो रूप रागिनि बतावो भेद तालन की ।
बीन लै बजावो राग रागिनि विधान की ।।
नुपुर पगन बाँधि नाचो हम ताल देवो ।
हिया हंसि लावो चलो कुंजन लतान की ।।

पद १९

रास मधि नीरतत हैं रघुराई ।
रास सिंहासन मधि सिय राजत लालन उर सुख पाई ।
प्यारी रिझत तानन भीजत नुपुर पगन सुहाई ।।
प्यारी रिझ दियो है चौसर मधुर अलि बलि जाई ।।

पद २०

नइ नइ तान रसीली गावत ।
पियारे रिझावत मन सिय प्यारी को,
नट निकला नये भाव दिखावत ।
नैन सैन चलावत बाँकी भुव मटकाय मंद मुसुकावत ।
फंदा अस सुलखि मधुरी, प्राण प्रिय सर्वस निवछावत ।।

पद २१

नाचत श्याम प्यारी मुसुकावती ।
कबहुं आप नचत पुनि प्रीतम हंसि-२ सैनन संग नचावती ।।

कबहु वीन लइ मधुरे सुरगावति, पुनि प्रीतमहि गवावती ।
दम्पती रसलीला मोहनी,मनरिझति पुनि-२ पियहि रीझावती

पद २२

आउ आउ री सहेली लखु चाँदनी ।।
रघुनन्दन अरु जनकनन्दनी, संग सखी सब माननी ।
बन प्रमोद बिच रास रच्यो हैं,छाइ प्रभा अहलादनी ।
चन्द्रकला अलिबीन बजावति,गावें चारुशिला प्रियवादनी ।
और सखी सब नृतति गावति, मनहु देह धरि रागनी ।
तन मन प्राण निछावर प्यारे, देखि नटत प्रिय प्राननी ।
पिय हिय लागि मगन सिय स्वामिनि,'नेह' मधुर रस स्वादिनी

पद २३

देखो सखी रहस कलोल नटत पिय प्यारी ।
यह चटक चाँदनी सरद चन्द्र उजियारी ।।
सुन्दर अशोक वन कुंज सदा सुखकारी ।
फूले द्रुमलता वितान मधुप गुंजारी ।।
वीनाधर वीन बजाय गाय लय धारी ।
सहजा सितार कर धारि लेत गति न्यारी ।।
चन्द्राननि मृदंग टंकोर चन्द्रकला नारी ।
सुभगा जू सप्त स्वर घोरि रहस मतवारी ।।
यह रास विलास अपार सिंधु अति भारी ।
'ज्ञानाअलि' क्यों करि कहै पगु मति हारी ।।

पद २४

अलि छवि देखु शरद की यामिनी ।

विमल अकास चन्द्र परिपूरन,

रासकुंज चलिये गजगामिनि ।।

देखी जाय बिपिन अदभुत तहँ,

मण्डल बिभाग मणि भूमि सुनामिनि ।।

नटवर अदभुत वेष रसिक मनि,

अदभुत चन्द्रकलादिक भामिनि ।।

अदभुत अवध रंगमनि महलैं,

अदभुत श्रीसरयू वर कामिनि ।

नटति परस्पर बाहाँजोरी,

अदभुत 'युगलप्रिया' की स्वामिनि ।।

पद २५

प्यारी तेरे नयना मदन सरवारी ।

रतनारी कारी कजरारी, चन्द्र बदन पर अति छविधारी ।।

चितवन बाँकी तिरछी प्यारी, मम हिय को घायल करि डारी

मीन कमल खंजन दुतिहारी, सब विधि प्राण अधार हमारी ।

हँसनि नटनि 'अरु' अंग मरोरनि, देखि-२ मैं जाऊँ बलिहारी ।

रूप उजागरि 'अग्र' तियन में, हौ तुम श्रीमिथिलेश दुलारी ।

पद २६

प्यारे मुख चन्द विलोकहु सजनी ।

क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल, नयन कमल दल अति छवि

छवनी । नासामनि अधरन पर राजत मनहुँ कमल दल सुक्र उदवनी ।। कल कपोल पर अलकैं छूटैं, चन्द ऊपर मनो बसि वहु अहिनी । कटि कछनी काछे बने आछे, पद में नूपुर अति मन हरनी ।। मुरनि ढुरनि अरु हँसनि नटनि में, कोटिन काम करौं निवछवनी ।। रूप उजागर 'अग्र' स्वामि मोरे, मम हिय के हैं प्राण संजीवनी ।।

पद २७

सरद पून विमल चन्द विमल मही अनन्द कन्द,
रामचन्द्र रास रच्यो देखन सखि धाई ।।१।।
सरयु पुलिन विमल कूल फूले बहु रंग फूल,
कमल चम्प केतकी कदम्ब सुरभि छाई ।।२।।
बोलहिं सारी मयूर कोकिला मराल कीर,
गुंजहिं अलि सकल राग रागिनी बनाई ।।३।।
किन्नरी अप्सरा गान मूर्छन स्वर ताल तान,
धरहिं भूमि तरुन लतन नीर गगन जाई ।।४।।
बाजहिं मृदंग जंग सारंगी तमूर चंग,
वीणा वेणु आदिक स्वर ताल गति सुहाई ।।५।।
युग युग बिच सखि बिच बिच एक मध्य,
रामनिरतत,संगीत ताण्डवी सुगंध गति अनेक ल्याई।।६
गावहिं नट राग रागिनी स्वर ताल ग्राम,
सब धरि सखि रूप रामरास हेतु आई ।।७।।
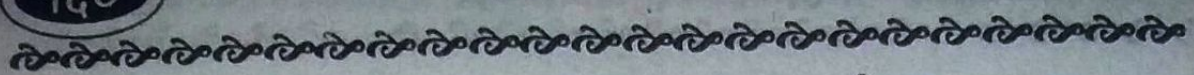
जानकी रघुनन्दन मन भावती भइ रैन ब्रह्म,
'रामचरण' सर्व जीव परमानन्द पाई ॥८॥

सखी सहत युगल के नृत्य समुहिक पद २८

रसिक दोउ निरतत रंग भरे ।
विपिन अशोक रास मण्डल बिच जनकलली रघुलाल हरे ॥
अमित रूप धरि करि कछु चेटक, युग युग तिय मधि श्यामअरे
क्रीट मुकुट की लटक चन्द्रिका झुकनि मदन मद दूर करे ॥
मोतिन हार युगल उर राजत कुन्द मालती माल गरे ।
पग नूपुर मंजीर मधुर छबि कंकन किंकिनि मुखर तरे ॥
मुरज मजीरा ढोल सरंगी अरु मुरली की टेर करे ।
विविध तान संगीत अलापत तताथेइ तताथेइ कहत खरे ॥
कबहुँ मधुर मुसुकाय के दम्पति निरखत छबि भुज अंश धरे।
कबहुँ सुरति करि ब्याह समय की फिरत भाँवरी रसिक वरे।
यह रस रास महा सुख सागर द्वादस योजन लौं सँवरे ।
'रस माला' भरि पूरि रही वन जग कोइ बून्द प्रकाश करे ॥

रास में प्रियाजू का मान पद २९

नृत्यत सब सखियन मिलि प्यारी ।
सब के बदन निहारत पोछत, रघुकुल दीप उजारो ॥
लखि पिय को अतिही कोउ तिय पर, प्रेम मदन मतवारो ।
'रामसखे' सिय छिपी रोस करि तजि अंजन दृग कारो ॥

पद ३०

पिय सियहिं मनावत जात री ॥

मनहु मनोज उरोज शंभु लखि, जात समीप डरात री।
गाय बजाय रिझावत बहु विधि बार बार बलिजात री।।
सुकर सरोज बदन हिमकर सों परसत अति सकुचात री।
धरि ठोढ़ी कर पुनि पुनि चूमत मनहु अमी रस खात री।।
गोद बिठाय मोद अति परसत प्रेम प्रीति लपटात री।
'मधुरी' हँसि सिय मिली अंक भरि आनंद उर न समात री।

समुहिक पद ३१

सखिन बिच नृत्यत युगलकिशोर ।
विपिन प्रमोद सरोजा तट पर, दिव्य भूमि चमकत चहुँओर।
चक्राकार रास मण्डल रचि राग रागिनी के कल शोर ।।
चन्द्रकला विमलादि रंगीली, वीण मृदंग लिये कर घोर।
चारुशिला सुभगा हेमा लिये, मुरली मुचंग किन्नरी जोर।।
चन्द्रा चन्द्रवती मिलि गावति, क्षमा स्वरहिं भरत रस बोर।
मदनकला करताल बजावत, सारङ्गी नन्दानि टंकोर।।
पिय शिर सुभग सुक्रीट बिराजै, चन्दिका सीता के शिर रोर।
चन्द्रहार प्यारी उर चमकत पिय उर मोतिन माल उजोर।।
कोटि कोटि रति काम विमोहन, नटवर वेष श्याम अरु गोर।
रूप माधुरी कहि न परत है, अंग अंग छवि के उठत हलोर।।
कर से कर दोऊ मिलि धारे, नयनन सैन चलत दुहुँ ओर।
कबहूँ अधर रस पियत परस्पर, रस मतवारे दोउ चितचोर।
प्यारी हाव पिया चित करषत, पिय के भाव प्यारी निजओर
दोउ रस सिन्धु मगन रसलम्पट 'अग्रअली' नहिं चाहत भोर।

पद ३२

नटत राम नागर नागरिया ।
चन्द्रकला कल वीण बजावति, गावति चन्द्रवती सहचारिया ।
रघुनन्दन तोरत मृदु तानन, सीता स्वरन भरति मनहरिया ।
सुनि सुनि थकित भये सरयू जल,मुनिजन सकल भये बावरिया
प्यारी अंश पिया भुज धारे, पिय अंशन प्यारी भुज धरिया ।
मनहुँ तमाल लता कुँजन में साँवर गौर परस्पर अरिया ।।
सुधि आवत जब ब्याह समय की,रास समय दोउ लेत भँवरिया
या सुख सिन्धु रूप के ऊपर, रति पति कोटि वारने करिया ।।
बनप्रमोद बिहरत नानाविधि, अवध ललन अरु जनकदुलरिया
'रामसखे' दम्पति लीला रस, लखि लखि दृगन प्रेम उरभरिया

पद ३३

क्या सौक सहित दोउ नचि रहै, सियालाल अरु प्यारी ।
मंडल मनोज मान मथन हो रही रहस्य रस जारी ।
झुकनि लुकनि रुकनि हलनि चलनि गति सारी ।।
किंकिनि बाजत नुपुर झनकावत प्यारी की भूषण झनकारी
गति वांसुरी पिय चातुरी सिय वीण करधारी ।
हँसि हँसि नचै थेई थेई करै अलि लेत बलिहारी ।
छहरि छटा मुखचन्द उजियारी सियालाल कीप्यारी ।
फिकौ लगै निसि राजरी लखि रसमोद लतारी ।।

पद ३४

नई नई वधूटी आनि जुरी, धरि लई लालजू की आँगुरिया ।

इक ओर अली मिथिलेश लली,सब गुन की आगरि नागरिया
सिय भाल चन्द्रिका चमकि रही,प्यारे रामलला शिरपागरिया
मुखचन्द सों चन्द्रमिलाय रही,गुण गावे पिया कि माधुरिया।
सुख सागर नागर नटत दोऊ, लखि'युगलप्रिया' बड़भागरिया

पद ३५

आज जनकदुलारी रस रंगन भरी।
चंपक वरनवारी वसन सुरंग वारी बदन मयङ्कवारी रूप अगरी।। अरुण अधर वारी बोलनि मधुर वारी तिरछी चितवनि सर मारति खरी। वेसरि सुपास वारी भुजन मृनाल वारी उरज उतंग वारी मदन जरी।। मोतिन के हार वारी मध्यभाग छीन वारी जघन गम्भीर वारी भावन भरी। गमन मराल वारी नूपुर झनकार वारी 'रसमाला' उर वारी मोह्यो मन री।।

पद ३६

शरद सोहनी रैन अली री।
उज्वल अमल व्योम राजततर, उद्दीपन रसराज भली री।
चन्द चाँदनी चमकति चहुंदिशि,फूली नवला कुसुम कली री।
जनु श्रीयुगल ललन मंगल हित,विहित हास रस रासथली री
फरस फनूस स्वच्छ मनिगन फवि,कवि उपमाहेरत न मिली री
तदपि सकुच बस वरनि कहतकवि,मनुअद्‌भुत मनिभूमिफलीरी
बीना बेनु झीन सुर रागन, कंज करन मधि मोद मिली री।
नटत नवल दम्पति सुख सम्पति,तेहि अनुरूप अनूप गली री।

हेमलता प्रीतम तमाल लसि,लपटि सु झूमति जनु अमली री।
नव नागरि नागर उछाह हिय, 'युगलअनन्यअली'अवली री।

पद ३७

छूम छननन पग नूपुर बाजै नटत छैल छबि अग भरे ।।
बिच बिच श्यामा श्याम मनोहर, युगल युगल गलबाँह धरे ।
छोरनि गहनि कहनि कछु हँसिहँसि,अरस परस छबि फन्दपरे
कँचनलता तमाल तरुण तरु, रस विहार जनु फूलि फरे ।
'ज्ञानाअलि' सुख स्वाद रसिकजन, पावैं ते कबहूँ न टरे ।।

पद ३८

रास मण्डप मध्य सोम श्रवन वट,नटत प्रिया प्रीतम आजु री
अलिगन जाल मकर सम चहुँदिशि,बीचहिं दंपति भ्राजु री।
विविध भाँति भूषन पट शोभे, शिरन चन्द्रिका ताजु री ।
कबहुँ प्यारी मुख चूमत प्यारे, अंशन भुज युत छाजु री ।
राग अलापत नृत्यत थेइ-थेइ, नहिं कछु लावत लाजु री ।
मन्द मन्द मुसुकात परस्पर, माधुरी वीणा बाजु री ।
पान खवावत गर लपटावत, नयन मयन सर साजु री ।
चन्द्रकला सखि चँवर ढुरावति, 'जानकि' मने मन गाजु री ।

प्रीतम जू के गान पद ३९

नटत सियाजू पिया लेत बलिहरिया ।।
छम छम छमकत नूपुर बजावत, पिया मन मोहति, कहति हरि हरिया । पीत चम्पा फूल पर घन सोहत छवि, तापर नखत दामिनी फूल झरिया ।। लेत तान जब प्यारी नई

नई, वाह वाह कहत पियाजू स्वर भरिया। 'नवल विहारी' प्रिया बिरिया खिलावत जय जय कहत सखिन मनहरिया।

प्रियाजू के गान पद ४०

नटत पियाजू सिया लेत बलहरिया।
जब पिया घूमत वागा फहरत,सिया मनकहरत मदन लहरिया
कंपत चलत पसेवनि अँसुवा,उमगत मनहुँ सावनकी नहरिया
गिरि गिरि लेत पिया तान अलापत, मूरछि परत सखि सिय थरहरिया। 'नवलविहारी' प्रिया पिया रस लूटत, प्यारी पर छिरकत चन्दन फुहरिया॥

पद ४१

झमकि झमकि लली लाल की नटनियाँ।
निरखि निरखि अली हिय कसकनियाँ॥
बाजत मृदंग वीन सारंगी तमूरा झीन,अलगोजा वंशी बाजे बाजत पैंजनियाँ। मृगी नाचे चन्द पर शेष नाचे शंभु पर, कवि नाचे बिम्ब पर मनके हरनियाँ। कर सोहै कर धरि थिरकि थिरकि अली, तत्ताथेइ तत्ताथेइ ताथेइ कहनियाँ। 'नवल-अली' के लली बन्द के बंधनियाँ, रसिक शिरोमनि सों रस के पियनियाँ॥

पद ४२

साँवरे सलोने जू झमकि झुकि आवे रे।
शरद की रैन पिया अधिक सोहावे रे।

मन्द मुसुकाये प्यारीजू के गलबाँह दिये, ऊँचे स्वर तान ले मधुर स्वर गावे रे। रास मण्डल अली संग लली कर धरि, छम छम छननन नुपूर बजावे रे। कटि लचकनि ग्रीव मुरनि घुरनि नैन, कुण्डल हलक मनि क्रीट झलकावे रे। 'नवलविहारी' प्रिया लली संग रस बस, अली संग लता कुँज मन ललचावे रे ।।

पद ४३

आजु शरद रैन गोरी झमकत आवे री।

गोरी चन्द गोरी लली चन्दन के विन्दा गोरी, गोरी मनि वसन भूषन झमकावे रे। उरज उतंग गोरी मन्द मुसुकनि गोरी, गोरी दृग कोरन सो मदन जगावे रे ।। हिय बिच हार गोरी कटि में किंकिनि गोरी, गोरी पग नूपुर छमकि छमकावे रे। 'नवल विहारी' प्रिया लली लाल हिलि मिलि, नटत उमंग रांग रागिनी जमावे रे ।।

युगल नृत्य पद ४४

पिया प्यारी नटनि में पायल बजायो री ।।

झननन झननन छननन छननन, किनिनिनि किनिनिनि किंकिनि सोहायो री। कर धरि नटनि चक्रगति घूमनि, फहरनि बसन सुगंध छहरायो री ।। चहुँदिशि अलिगन कुहुकि कुहुकि हिया, मदन उमड़ तन नूपुर बजायो री। 'नवलअली' के पिया नायक सुभुज गहि, किंशुक प्रवेश करि बिंब रस पायो री ।।

लली जु के गान पद ४५

प्यारी जू मुसुकनि में कछु कीन ।।

छमछम छमकत नटत सखिन में, दृगन के कोर में हरत मन मीन । उरज उतंग प्यारी चलत उतंग जब, मदन के जोर ते काँपत तन खीन ।। कटि पर कर धरि मुख चमकावत, भौंह की मरोरनि में रस बस लीन । 'नवलविहारी प्रिया' मोहन मोहत, उरज गहत हिये हिय बिच दीन ।।

लली जु के नृत्य पद ४६

सँवलिया तेरे ज़ुलफ़ें ज़ुलुम करे ।।

निरखत मदन चढ़त नखशिख लौं, कहकत अहकत भूमि परे। उरज प्रबल मानत नँहि मिनती, कहर लहर तन पीर भरे ।। कंपत अंग पसेवनि टपकत, लर खर कण्ठ नयना अँसुवाँ झरे। 'नवलबिहारी' प्रिया स्वामिनि हिय बिच, नवल छयल छवि रहत अरे ।।

पद ४७

शरद रितु रतियाँ सुभग लागे री ।

सोम बट छहियाँ दिये गलबहियाँ, रास रस महियाँ प्रेम पागे री ।। नटनि मुख मोरैं सु दृग दृग जोरैं, सु छवि श्याम गोरैं दोउ राग रागे री । 'जुगल' नव नेही रसिक प्रिय एही, हिये में निबसेरी मेरे भाग जागे री ।।
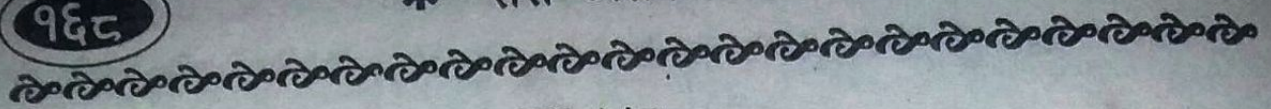
पद ४८

देखो देखो री नटनि पिय प्यारी की आज ।
रस रास रच्यो सह सखि समाज ।।

मुखचन्द्र चन्द्रिका प्रभा फैलि,प्रफुलित सफलित हिय प्रेम बेलि
कलकेलि करत भुजगर सुमेलि,ताताथेइ ताताथेइकरताल बाज
उझकनि झुझकनि मुरकनि सुअंग,कटिलचनि सँचनि मुद वचन
व्यंग, उर भरि उमंग हर रति अनंग,श्रीचन्द्रकलादिक संगभ्राज
यह युगलबिहार बहारदार, प्रिय 'युगलविहारिनि' हीय हार,
नित निगम सुनेति प्रकार प्यार, वरधन गुरु कृपया पूर्ण काज।

पद ४९

निरत करत नवल छैल नचत नृपति नन्दिनी ।।
अलिन पुंज चहुँ सुपास, मन्द मन्द करत हास,
होत विविध रहस रास, छिटकि शरद चन्दिनी ।।
मधुर मधुर बजत साज, छन छन छम छम अवाज,
करहिं सकल छमकि नाज, मार मद निकन्दिनी ।।
धाव ताव अति सुहाव, हाव भाव अतिहिं चाव,
नैन सैन करहिं वैन, पीय हीय फन्दिनी ।।
प्रगटि ललन अमित अङ्ग, बिच बिच अलि आप संग,
गाय गाय अति उमंग,हँसनि लसति मन्दिनी ।।
थिरकि थिरकि फिरकि फिरकि, फिरकी सी फिरति भूमि,
झूमि झूमि चूमि चूमि पद गयन्दिनी ।।

प्रमा प्रेमलता कुँज, कला केलि बेलि नेह,
जुगल सु विहार शिवाशिव सु बन्दिनी ।।
वन प्रमोद नित विनोद, निरखि बढ़त प्रेम पौध,
प्यारी पिय गोद पाय, गुरु पसन्दिनी ।।

पद ५०

रमत सिया दूलह रास नवीनो ।।
शरद चाँदनी छिटकि रही री, तामधि दोउ रस भीनो ।
नइ नइ राग अलापत प्यारो, प्यारी गर भुज दीनो ।।
निरखि निरखि मुखचन्द्र प्रिया को, पिय चकोर दृग कीनो ।
'सियाअली' वलि जात रसिकवर, कोटि काम छवि छीनो ।।

पद ५१

निरखु सखि रास किये दोउ राजैं ।।
शिथिल अङ्ग श्रमकन मुख ऊपर अलक छुटी सुख साजैं ।
चँवर छत्र सिर विजन ढुरावैं, चहुँदिशि अलिन समाजैं ।।
बहु सखि भूषण वसन सवाँरैं, चन्द्रिका वर सिर ताजैं ।
'प्रेमलता' सखि करहिं आरती, साज बाज मिलि बाजैं ।।

पद ५२

रास श्रमित बैठे मन भावन ।
चन्द्र मनिन सिंहासन ऊपर वाम भाग सिय अति छबि छावन मृदु कर कंज विजन कोउ सारति, श्रमसीकर पोंछति कोउ दामन । कोउ सखि दुहुँकर चरन पलोटति कोउ कर कोउ कटिलगी दबावन ।। कोउ सखि पुनि अँचवाइ दोउन को,

सोंधी रबड़ी लगी पबावन। सुरभित सरयू जल कोउ प्यावति, पुनि अँचवाइ रही भरि भावन।। पान पवाइ अतर अरपन करि फूल माल लागी पहिरावन । 'कान्तिलता' आरती उतारति नाचि नाचि सुख सिन्धु समावन ।।

पद ५३

करत आरती सरद समय की ।
सरद कपूर पूरि वर थारन, जगति जोति सुख होत गमय की
चमर छत्र छबि छाय रही सब, सहचरि गाय बजाय किलोलैं
नचत नवल नव जल पट तारति,वारति तनमन जै धुनि बोलैं
नव नव गुननि रिझाय भिजाये, हर्षि जुगल मन सकल प्रहर्षी
जयति 'प्रसाद निवास' अली सब, लै बलिहारी सियजू वर की

पद ५४

जीते रहो रास रसिक विहारी ।
तेरी मुरति मेरे दृग अरुझी, पलकनहु जिये न्यारी ।
सरयु पुलिन रास ललना संग,नितयेही आस हमारी ।
कृपा निवास असीसति सुख लै, प्यारी जीव जिवारी ।।

श्री हनुमानजी की बधाई

पद १

कातिक मास असित तिथि चौदसि श्रीहनुमत अवतार लियो
केशरि नन्दन जन मन रंजन सजि सुख सबहिं दियो ।।१।।
शीतल मन्द सुगन्ध पवन चलि मेघन छाँह कियो ।
बरषत पुष्प माल इन्द्रादिक जय धुनि शब्द कियो ।।२।।

नाचति नभ अपसरा मुदित मन प्रेम पियूष पियो ।
चौदह भुवन चराचर दशदिसि आनन्द हुलसि हियो ॥३॥
लंक शंक आनन्द देव गन जीवन सबहिं जियो ।
'लालमणी' भव उदधि मगन लखि बूड़त काढ़ि लियो ॥४॥

पद २

मारुत नन्दन भव भय भंजन प्रगटे भू पर आई ।
अंजनि दिब्य भूमि मनि आकर हनुमत मनि प्रगटाई ॥
देवन के दुख दारिद नाशे निज निज थलहिं बसाई ।
कातिक मास असित पख चौदसि वार योग समुदाई ॥
चर अरु अचर गगन जल थल दिशि आनन्द उर न समाई
व्योम विमान गान धुनि गंधर्व नृत्यत सुर समुदाई ॥
इन्द्रादिक ब्रह्मादि देवता सुमन वृष्टि झरि लाई ।
केशरि नन्दन जग अभिनन्दन कीरति अचल चलाई ॥
'लालमणी' पर करहु कृपा प्रभु भक्ति निछावरि पाई ।

पद ३

घर घर मंगल चार सोहावन अंजनि प्रिय सुत जायो ।
शुभ नक्षत्र स्वाति शम्भू तिथि ऊर्ग्य मास सब भाँति सुहायो
मंगल करन आभरण अनुभव मंगल दिन महि नेह जनायो।
निगमागम जाकी महिमा को गावत पार न पायो ॥
नेति नेति जेहि निगम बखानत ईशन ईश राम गुन गायो ।
राज राज महराज रघुत्तम निज मुख सुयश सरस अनभायो।
'श्रीमतिशरण' भक्त भय भंजन अंजनि नन्दन जन सुख पायो ।

पद ४

बाजै बाजै बधाई आज पवन सुत प्रगट भयो।
कातिक मास असित पख चौदसि त्रिभुवन में आनन्द छयो।
केशरि कपि के भवन सुआसिनि रसमय मंगल गान ठयो।
देव निशान बजावत गावत हरषत बरषत सुमन चयो।
'प्रेममोद' रसिकन उर सरसत सुचि रस सिय पिय भक्तिजयो

पद ५

भले दिन वर्ष गाँठ आज आई।
मंगल गावति चौक पुरावति श्री हनुमत की माई।
सुनि नौवति धुनि गुनियनि के गुन घर घरते नव नागरि छाई।
'कृपा निवास' विलास मगन भइ भूलि गई सुघराई॥

पद ६

हरषि बधाई गावो आज जन्म गाँठ कपि राज।
केशरि हरि घर घुरि रहै नौवति नागरि जुरियो समाज।
नाचै नवला थकित भक्त सब त्यागि जगत की लाज।
'कृपा निवास' उपासिन के हित प्रगटे प्रेम जहाज॥

पद ७

पवन सुवन मन भावन तत्व लखावन हो।
ललना केशरि कपि के भवन प्रगट छवि छावन हो॥१
मेष लगन दिन मंगल मास सुभ कातिक हो।
ललना कृष्ण पक्ष तिथि संभु नषत भल स्वातिक हो॥२

बाजन लागि बधाई सरस सुषदाई हो।
ललना सोहिलो गाय सुआसिन रंग मचावहि हो ॥३
अंजनि आँगन भीर सु कौतुक राँचहि हो।
ललना बन्दी मागध सूत नारि नर नाचहिं हो ॥४
देव विमानन आय सुमन झरि लावहिं हो।
ललना जै जै कार सुनाय महा मुद छावहिं हो ॥५
विप्र वेद धुनि करहिं नान्दिमुष श्राधहिं हो।
ललना जात कर्म करि सकल देव अवराधहिं हो ॥६
अंजनि केशरि सम्पति आनन्द भरि भरि हो।
ललना विप्र जाचकन देहि लेहि सुख ढरि ढरि हो ॥७
वन्दन माल पताक कलश ध्वज आदिक हो।
ललना महल सु नगर सँवारि मगन मन स्वादिक हो ॥८
छठी बारहो आदि किये सब उत्सव हो।
ललना 'प्रेम सु मोद' अपार अकथ छबि नित नव हो ॥९

रेखता पद ८

बधाई वायु लालन की। सु गाइये मोद मालन की ॥
सु मंगल मास क्या कातिक। नखत मंगलमयी स्वातिक ॥
दिवस मंगल महा मंगल। अमित चौदसि सु रस रंगल ॥
सुहाई साँझ की बेला। जनम भो मौज की मेला ॥
सुयश कहि सुर सुमन बरषैं। सु अंजनि पवन सुनि हरषैं ॥
हमनि की बन्दि छोरोगे। निशाचर वंश बोरोगे ॥
सियावर भक्ति रस रंगी। सुहाई वीर बजरंगी ॥
अनन्दी आपने चरणें। लगाई श्रीमती शरणें ॥

पद ९

युग युग जीवैं तेरो लालन अंजनी माई ।
रूप सिरोमनि सब गुण सागर तेरो भाग सिहावन ।
ब्रह्मादिक जाके बस वरती सो तेरे गोद खेलावन ।।
सिय प्यारे संग रहत हजूरी रसिकन रस बरसावन ।
'कृपानिबास' मनोहर मूरति हमरे भाग सोभावन ।।

पद १०

सुनो री सजनी आजु बाजी बधाई ।
प्रगट भय सिय पिय के दुलारे संत जनन सुखदाई ।
मंगल साज सजो री सजनी चलु घर अंजनी माई ।।
मंगल मुरति को दरसन करि लोचन को फल पाई ।
सियाअली कपिपति के चरन गहु मिलिहु सिया रघुराई

पद ११

चलो नाचो री अंजनी अंगना ।
श्रीसियाराम प्रेम की मूरति प्रगटे श्रीहनुमत ललना ।।चलो०
अब दुख दूर भये सबही को रसआनंद झरत झरना ।।चलो०
सुर नर मुनि सबमगन भये हैं वर्षत सुमन बजत बजना।चलो०
'सियाअली'कपिपति निवछावरि मागौं प्रेमभक्ति गहना।चलो

दीपावली उत्सव पद १

साँझ समय रघुबीर पुरी की, सोभा आजु बनी ।
ललित दीप मालिका विलोकहिं, हित करि अवध धनी।।
फटिक भीत सिखरन पर राजति, कंचन दीप अनी ।
जनु अहिनाथ मिलन आयो अनि, सोभित सहस फनी ।।

प्रति मन्दिर कलसनि पर भ्राजहिं, मनिगन दुति अपनी ।
मानहु प्रगटि विपुल लोहितपुर, पठइ दिये अवनी ।।
घर घर मंगलचार एक रस, हरषित रंक गनी ।
'तुलसीदास' कल कीरति गावहिं, जो कलिमल समनी ।।

पद २

सजनी रजनी लसंत लुनाई ।
कनक भवन में दीपमालिका, जगमग जोति जगाई ।।
गुल्मलता तृण द्रुम तरु कानन, दीपक मनिवित छाई ।
वेदी आलवाल सब वापी, दीपति कूप तलाई ।।
नगर बजार गलिन पर राजत गोपुर अति दुति पाई ।
अटा कंगूर कुम्भ छज्जन पर, मनि दीपावलि भाई ।।
ध्वजा पताक पिधान वितानन, दीपक मनि रुचिराई ।
गोक्र झरोख ताख तोरण पर, अजिर सरस करझाई ।।
चँवर छत्र विजनादि सिंहासन सौजे पट समुदाई ।
भूषण दीपक मणिमय राजत, साजत दशदिशि ठाई ।।
आस पास अलि अवलि बिराजत, मध्य सिया रघुराई ।
दीपमालिका भवन चौक बिच, मण्डप अति रुचिराई ।।
चौपर अध सतरंज गज्जीफा, नरद सखी सब लाई ।
खेलत मध्य सिया रघुनन्दन, वित्त अथोर लुटाई ।।
कौतुक विविध करत, अलिगन सब क्रीड़ा रस समुदाई ।
नृत्यत गान स्वाँग बहु लावत, हाँस रही अधिकाई ।।

विपुल खिलौना छुटत वरुदी कृत्रिम गुण बहुताई।
'रसिकअली' यह युगल केलि लखि, बहु रति मदन सिहाई।।

पद ३

देखु सखी भलि रैनि दिवारी।
खेलत चतुर रंग भरि चौपरि, दशरथ नन्दन जनक दुलारी ।।
दीप पंक्ति चहुँओर बिराजत, अलिगन अंग सरस उजियारी।
विपुल कला गुन निपुन विहारिनि, तैसइ सुन्दर अवधबिहारी
विमलादिक पिय ओर भई हँसि, सियदिशि चन्द्रकलादिक नारी
हास विलास परस्पर सरसत, दरसत रसिक प्राण बलिहारी ।।
यह सुख साज समाज प्रसंसित, होत परम सुख दाव सँभारी।
जीती श्रीमिथिलेशनन्दिनी, 'युगलप्रिया' पिय तनमन वारी ।।

पद ४

सखि रेनि दिवारी प्यारी ।
चहुँदिशि दमकि रही दीपावलि, महामंनिन उजियारी।
प्राण प्रिया परिकर समेत, रघुलाल ललित छवि भारी ।।
खेलहिं चौप चाव संयुत बहु, भाँति जुवा हिय हारी ।।
श्री सिय तरफ भई अलिगन बहु, लाल ओर दुति वारी।
मची महामुद दोह द्यूत वर, एक एक ललकारी।।
चतुर चार चूड़ामनि रघुबर, हारे हरष हजारी।
'युगलअनन्यअली' जीती जय, श्री मिथिलेश दुलारी ।।

पद ५

निरखु सखि दीपन की छबि छाई ।।

अवधपुरी प्रति महल गलिन की, शोभा बरनिन जाई।
सप्तकोट के नवल सिखर पर, जगमग जोति जगाई॥
अलिन सहित चढ़ि उच्च महल ते, देखत सिय रघुराई।
जल थल व्योम दीपमय राजत, 'प्रेमलता' मन भाई॥

पद ६

आज है सखी रैन दिवारी।
हाट बाट वर ठाट रोशनी, जगमग महल अटारी॥
चौसर खेलत कनक भवन में, अवध छयल सिय प्यारी।
पासा फेंक मार पौवारह, जीती जनक दुलारी॥
बार बार हारत रघुनन्दन, सखिन बजावत तारी।
हास बिलास करत सखि सुन्दर रैन बीति गई सारी॥

❁ अन्नकूट उत्सव ❁

पद १

आजु महोत्सव अन्नकूट की अति आनन्द उमगाई जू।
चारि भाँति षटरस के भोजन नाम न जाहिं गनाई जू॥
भिन्न भिन्न अलि साजि धरे सब पावत सिय रघुराई जू।
मनिन कटोरन कनक थार में शोभा वरनि न जाई जू॥
कुँज कुँज ते अलिगन देखन कनक भवन सब आई जू।
बहु सखि गावहिं साज बजावहिं गारी मधुर सोहाई जू॥
सुनि सुनि दम्पति हिय हुलसावें पावत मोद बढ़ाई जू।
सरयू जल पी अँचवन कीन्हें पान खात मुसुकाई जू॥

करि आरती सीस अलि नावें तन मन धन निवछाई जू ।
'प्रेमलता' परसादी पावति अलिगन सबहिं पवाई जू ॥

पद ७

जेंवत नवल रसिक रघुनन्दन संग सिया सुकुमारी ।
बैठे ललित चौकि पर दोऊ विद्रुम चौकी पर मनिथारी ॥
नव नव व्यञ्जन विविध भाँतिके षटरस भोजन चारी ।
कहि मृदु बचन परोसत नव सखि जेवत नव पिय प्यारी ॥
बाजत विविध बजाय सखी नव गावत नव स्वर गारी ।
अन्नकूट वासर मुद उमगत कुंज नवल छवि भारी ॥
सरयू जल अंचवाय नवल नव वीरी देत सुधारी ।
विविध सुगंध फूल श्रग आरति करत 'रसिक' बलिहारी ॥

पद ८

भोजन समय जानि कै सखि सब आनि धरे री ।
मेवा मगद मिठाई मिश्रित कंदकला न बने री ॥
खटरस मिठरस और विविध रस व्यञ्जन स्वाद सने री ।
जीमत लाल लाड़िली रुचि सों रहस भाव उघरे री ॥
जल प्यावति रुचि और जनावति अचवन पान करे री ।
अष्ट सखी मुख्य शेष सवनि दै बीरी बदन भरे री ॥
करत आरती वारति तन मन मनके मनन फरे री ।
'कृपानिवास' श्रीजानकी बल्लभ जीवन धन हमरे री ॥

❀ नगर दर्शन ❀

पद १

इत औ लखो आवता अवधेश लाल है ।
गलियो के बिच झुमता मस्ताना चाल है ।।
नैना दोउ नुकिले मुख मंद हास है ।
अधरन पे पान लाली सुन्दर या गाल है ।।
अलकै अतर भरी हुई इत उत बिखर रही।
मानो हिया फँसाने को काम जाल है ।।
देखो अलि री जालिम छैला है यह वही ।
जिसको निगाह मोहनी रहता निहाल है ।।

पद २

देखो छलि छबिला दशरथ कुमार हैं ।
उधम मचाया जनकपुर में बेसुमार है ।।
नैना दोऊ चोटिले अरि तेज धार हैं ।
नारी को कतल करने को हरदम तैय्यार है ।
मनमोहनि की जादू हँसि करन हार है ।
छैला अजब अनोखा सखी सानदार है ।।
लखि के छवि मोहनी तन ना सम्हार है ।
मन बार बार बार हमें बार बार है ।।

पद ३

मन ले लिया रंगीलै सुन्दर सुजान ने ।
बे सुद किया सभी को भृकुटि कमान ने ।।

वह साँवलि सी सूरत हिय में समा गई।
बावरी किया है मृदु मुसकान ने ।।
मिथिलापुरि में कहर मचा अलियों के बीच।
घायल किया जिनको जुल्फे कमान ने ।।
कहते बने सरुप ओ न देखते बने।
बस मोहनि को कर लिया नैना की सान ने ।।

०द ४

सखिये कौन लिये मग जात।
सुखमा पुञ्ज श्याम गौर मृदुल मनोहर गात ।।
वदन इन्द्र सरसिरुह लोचन कर शर चाप लटिकात।
डारी मोहनि बरबस करि मन्द मन्द मुसुकात ।।
देखत रूप अनूप की शोभा कोटि मनोज लजात।
जोवरि जाय जानकी को विधि सबै समारै बात ।।
जानिन जाय कहाँ ते आये कौन तात को मात।
सब गृह काज विसरि लखि इनके बिना कछु सोहात ।।

पद ५

मिथिला की गलिया गलिया घूमें दोऊ छलिया, देखु सहेलिया हे
एक अहैं श्याम एक गोर ।।देखु सहेलिया हे०।।
नयल कमल दलिया, घुंघराली अलक जलिया देखु सहेलिया हे
रसिकन मन बाँधन की डोर देखु सहेलिया हे०।।एक अहैं० ।।

आँखि के पुतलिया सो बन्दूक है दुनलिया देखु सहेलिया हे।
बनल निशाना मनवाँ मोर देखु सहेलिया हे ।। एक अहैं० ।।
नैन के कजलिया घोर, घोर हलाहलिया देखु सहेलिया हे ।
करके करेजा दृग कोर, देखु सहेलिया हे ।। एक अहैं० ।।
नासामणि हलिया करे विहँसनि बेहलिया, देखु सहेलिया हे ।
अजब अनोखे लाल ठोर देखु सहेलिया हे ।।एक अहैं श्याम०
उर मणिमलिया, कण्ठ-उदर के त्रिबलिया, देखु सहेलिया हे ।
कटि में पीताम्बर जरी कोर, देखु सहेलिया हे ।।एक अहैं० ।।
ललित पद तलिया मात करै कमल कलिया देखु सहेलिया हे।
नख-मणि-चन्द्रिका अँजोर, देखु सहेलिया हे ।। एक अहैं० ।।
मत्त गज-चलिया लखि के लजति मरलिया देखु सहेलिया हे।
जियरा के देवें झकझोर देखु सहेलिया हे ।। एक अहैं० ।।
निरखी जिन अलियाँ,तिन्हें भावै ना महलिया देखु सहेलियाहे।
परीं प्रेम सिन्धु के हिलोर, देखु सहेलिया हे ।। एक अहैं० ।।
अजब भई हलिया,घर के कइसे हो टहलिया देखु सहेलियाहे।
बरबस लीन्हें चित्तचोर, देखु सहेलिया हे ।। एक अहैं० ।।
आली भलि भलिया लखिलखिजावै बलिबलिया,देखुसहेलियाहे
रहीं छवि छकि तृण तोर, देखु सहेलिया हे ।। एक अहैं० ।।
मची खलबलिया, नगरी में हलचलिया देखु सहेलिया हे।
इन्हीं के चर्चा चारों ओर देखु सहेलिया हे ।। एक अहैं० ।।
प्रेम के पियलिया में अमिय रस घलिया देखु सहेलिया हे ।
भये सब रसिक विभोर देखु सहेलिया हे ।। एक अहैं० ।।

जनक जी के ललिया जोग सुन्दर संवलिया देखु सहेलिया हे।
बिरचे विधि कौसल किशोर देखु सहेलिया हे ।। एक अहैं० ।।
जोड़ी अलबेली जुरे जनक हबेलिया देखु सहेलिया हे।
बिनवै 'नारायण' कर जोर देखु सहेलिया हे ।। एक अहैं० ।।

❀ फुलवारी ❀

पद १

गिरजा पूजन चली सियारी।
संग सखी सब सौज लीय हैं, मनि कंचन की थारी।
रतन पालकी बनिहाल की रतन जाल की छवि न्यारी ।।
कीन्ही सीता सुरवात सवारी लीये उठाये वाहनी नारी।
छत्र, चँवर व्यजादि लिय सब गावत मंगल चारी ।।

पद २

रामचन्द्र के मुँहमा देखिके पागल भेलि हे सखिया।
श्यामलि सुरतिया देखी वाउर जीयरा भेल हे सजनी ।।
देखि अवधेश लाल तन मन भईले बेहाल।
हम देखि अयेलो दोउ राजकुमार हे सजनी ।।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल राजी लोचन विशाल।
तिरछी नजरिया तकी जदुया डारेला हे सजनी ।।
करमें लिये शुभ दोना धरेहैं चम्पकडार चुने कलियाँहजार।
हँसि-हँसि हेराला मन मोहना हे सज़नी ।।

पद ३

अँखिया अनोखे लाल की हिय बिच धँस गई।

सुरत छबीले छैल की जिय बिच बस गई ।।
लखि कै अनोखे रूप के जालों को हाय हाय ।
ललना जनकपुरी की सब जाय फँस गई ।।
अलकै कुटिल वदन पै झुकि झुमि लोटती ।
मन 'मोंहनी' अली के नागिन सी डस गई ।।

पद ४

ऐसे अनुपम वो नृप जाय देखोरी बहिना बलि-२ जावे निहाल।
युगल नयन बिच राखब हे वसास हे सजनी ।
हम देखि अयेलौ बौराइ भेली हे सखिया ।।
हम पर चलाई दियो टोना, किशोर गौर श्यामला सलौना ।
रामलखन को फुल बगिया में देखा,हथवा में लिये फुल दोना ।।
राम लखन को नगर बिच देखा येक है नीलम और सोना ।।
राघौ के देखि के घुंघट पट कीना, खुला रहा तनि कोंना ।
मृदु मुसुकाय राम मेरी ओर चितवै, हो गया जो कछु होना ।

पगलि सखी पद ५

आज सखी दो लाल मनोहर घुमि रहै इत उत फुलवरिया ।
मोतन लखि मृदु हँसि कै छैला, बावरि कीन्ही डारी 'नजरिया
ऐसी दसा भई ता छिन ते अलि नेक रहि नहि हाय खबरिया
'मोहनि अली' विलोकन चलु री, तोरत फुल गहे तरु डरिया ।

पद ६

काहे छूटल लिलार पर पसीना हो लाल
काहे छूटल लिलार पर पसीना ।
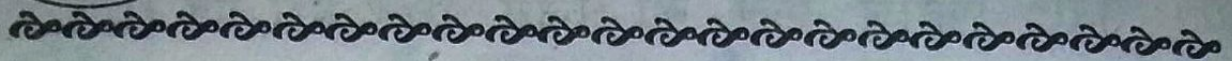
शरद के प्रभात रहे नाहीं दुपहरिया
नाहीं, रहल जेठ के महीना हो लाल ।।काहे छूटल०।।
लरिका–सेयान–बूढ़ नारी-नर वश कइके
चलल ऽ उतान कइके सीना हो लाल ।।काहे छूटल०।।
सिया जी के भूषन के रुनझुन के धुनि सुनि के
हिय के झनकार उठल बीना हो लाल ।।काहे छूटल०।।
देखते वैदेही के विदेह होइ गइलऽ
सिया जी के प्रेम के अधीना हो लाल ।।काहे छूटल०।।
नेह निधि 'नारायण' सिया जी अँगूठी
तू अँगुठी के भइलऽ नगीना हो लाल ।।काहे छूटल०।।

सखी बचन पद ७

जखन श्यामल वर लली मुख जोहलनि, निज सुधि गेला बिसराय
लोचन पलक झलक अटकौलनि, सनमुख लखि ललचाय ।।
चन्द्रप्रभा छवि छिटकत छलकनि, गर्व गुमान गमाय ।
रूप अमृत पीवि जिय जुरैलनि बेरि बेरि नयन चलाय ।।

सखी वारता पद ८

बलिहार भेला बगिया में पहुना, हमरा लली जु के निहारी हे
शशि मुख चख के चकोर बनौलनि चखलनि दृग पट टारी हे
निरखि निरखि अति सुख पौलनि सुधि बुधि देलन बिसारि हे
कोमल स्वभाव सुनि हिया हुलसौलनि सील सनेह विचारि हे
नयन पलकतर छवि को छिपौलनि झरलनि नेह कवारि हे।
हिय पट प्रेमक रंग बनौलनि चित्रित कौलनि सम्हारी हे ।।